



9115

॥

॥ ५ ॥

1990

ASHA ARCHIVES



1.550

ASHA ARCHIVES

12

आर्य समाज

1.550

INDIA ARCHIVES

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्रीरात्र

१५३

ॐ नमः शिवाय ॥ १ ॥ पञ्चमसि वरा वरुः इति काव्यमिषः
ॐ नानागात्रां सुखं वरुः प्राप्तिं नमः वरुः ॥ १ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ २ ॥ नमः शिवाय ॥ ३ ॥ नमः शिवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ५ ॥ नमः शिवाय ॥ ६ ॥ नमः शिवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ८ ॥ नमः शिवाय ॥ ९ ॥ नमः शिवाय ॥ १० ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ११ ॥ नमः शिवाय ॥ १२ ॥ नमः शिवाय ॥ १३ ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ १४ ॥ नमः शिवाय ॥ १५ ॥ नमः शिवाय ॥ १६ ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ १७ ॥ नमः शिवाय ॥ १८ ॥ नमः शिवाय ॥ १९ ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ २० ॥ नमः शिवाय ॥ २१ ॥ नमः शिवाय ॥ २२ ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ २३ ॥ नमः शिवाय ॥ २४ ॥ नमः शिवाय ॥ २५ ॥

१०

何

विद्यान

विनायकविष्णुमाधवः सर्वहृदये अग्रजः ॥ ४ ॥ मूलः पृथः अनन्तः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । श्रीकृष्णार्जुनसंवादे । अर्जुन उवाच ।

ईश्वरः हनरुविद्यावर्द्धमानसीव ॥ ॥ मुखभिष्ठापकः (मनः इत्यादि)

श्रीरुद्रात्मनश्चिद्विष्णोर्मासंयुतात्पुनः पश्चिमाष्टकं प्रसीदति ॥ ५ ॥ चर्म

॥ अथ श्रुत्वा पदं गवि संतुष्टः कुरुविप्रमुदीयतः ॥ आहूय नमिषकं धर्मः ॥

लङ्घयामाकाशं अकाशं चरन् धर्मया यः सः सन्निवृत्तः सः शिवः

ॐ नमः ॥ यत्किञ्चिदस्य सत्यं यत्किञ्चिदस्य सत्यं ॥ यत्किञ्चिदस्य सत्यं यत्किञ्चिदस्य सत्यं ॥

मन्त्रं कुरुनामोवासीदिति ६ ॥ अथ याम्य ॥ अथ याम्य ॥ अथ याम्य ॥ अथ याम्य ॥

पठित्तमः मित्रयामहृत्कलान्नमः यथायुक्तं प्रापदसायः

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१ वान

लानक विमसनिगतायवः॥ १ ॥ अयं अं धरुत दिगः भनदाकः
अ किमिडा लीजनअ वाजाअ धरुत विमसगतायवः धयग्राय
ननामं अनिजो॥ ॥ वायनासकावि भनं यानवः कुरुमिदुति॥ नवः
कायपुनं सफयतिनः यतिवृक्षः॥ ६ ॥ अयं अं धरुत मरुगतिम
सयययन धमः सिमा अतद्वनअ यकंदनमान सिमा नदुकिनअनघ

अ

अमितिः कदनवान॥ ॥ धनका जयदा गव विद्या संयद (म वृच॥
आहादवावदावपु लक सदा सदायवः॥ ७ ॥ धनदयक विद्या स
यकस आहाववावदावस भन तोर लका मउक सान॥ ॥ नयुव
ः सहाजीमाना नयुवः सहायिमा यहावयमि नहावाय संसावायधि
रुतयः॥ १० ॥ अयं अं धरुत मरुगतिम लक सदा सदायवः लक सदा सदायवः

१. खान

यसां सुवचुल्यमशुभं कामधामसाः श्वस्युपयापसादनः संसादनः
मृदपायमाययुयिडाभरुन॥ ॥ सातागंगासंतीर्थः पितापूजः
भवय॥ सुवचुल्यमशुभं सातागंगापूजः पूनः ॥ ११ ॥ ॥ सुवचुल्यमशुभं
सातागंगापूजः गंगासातागंगापूजः वचुल्यमशुभं सातागंगापूजः गंगासातागंगापूजः
द्वयः कदापितीर्थवचुल्यमशुभं सातागंगापूजः १ गंगासातागंगापूजः ॥ विद्यापंकः ॥

[illegible]

१ वानः

शुभकायं कलं तस्य नर वल्ले वसति ॥ १ ॥ **गवामनूषया वृषः शुभः**
नीम कलाः ५ प्रमह व पति न नरु ५ भुया कल शुभकाय वल्लु मा म ३ ॥
यात्रि था विड सा वान ॥ **॥ सर्व गी ॥ क भु ३ ॥ प ३ ॥ न ३ ॥ वि दी ॥ प ३ ॥**
॥ ३ ॥ ला क दी प ३ ॥ ध ३ ॥ म ३ ॥ स ३ ॥ प ३ ॥ ४ ॥ क ३ ॥ ल ३ ॥ द ३ ॥ प ३ ॥ क ३ ॥ ॥ १ ॥ ॥ ४ ॥
॥ या ३ ॥ वि ३ ॥ म ३ ॥ क ३ ॥ म ३ ॥ न ३ ॥
या क कलं म म दिन या म क क वं स र्च ॥ ३ ॥ ला क (ग) ला या क म क क संध र्च क
जा

मयान म कल स प ३ ॥ का य ॥ **॥ जनता साप न काय वल्लु वि था य य क**
लि ॥ भू त सा म र य व मा ॥ ३ ॥ वे क पि त ३ ॥ म ३ ॥ ला ३ ॥ ॥ १ ॥ ॥ ज न वि ३ ॥
म ३ ॥ पि ३ ॥ या ३ ॥ य ३ ॥ क ३ ॥ म ३ ॥ वि ३ ॥ या ३ ॥ स ३ ॥ न ३ ॥ म ३ ॥ न ३ ॥ का ३ ॥ अ ३ ॥ म ३ ॥ म ३ ॥ क ३ ॥ ह ३ ॥ द ३ ॥ स ३ ॥ न ३ ॥ स ३ ॥ न ३ ॥ म ३ ॥
ध ३ ॥ क ३ ॥ म ३ ॥ व ३ ॥ द ३ ॥ ध ३ ॥ य ३ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ उ ३ ॥ र ३ ॥ य ३ ॥ ती ३ ॥ या ३ ॥ क ३ ॥ य ३ ॥ ती ३ ॥ मि ३ ॥ उ ३ ॥ प ३ ॥ सि ३ ॥ त ३ ॥ वि ३ ॥ व ३ ॥ ॥ य ३ ॥ लि ३ ॥
मा ३ ॥ ना ३ ॥ स ३ ॥ मा ३ ॥ ना ३ ॥ व ३ ॥ य ३ ॥ वे ३ ॥ म ३ ॥ म ३ ॥ क ३ ॥ व ३ ॥ ल ३ ॥ ला ३ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ॥ उ ३ ॥ र ३ ॥ य ३ ॥ ती ३ ॥ या ३ ॥ क ३ ॥ य ३ ॥ ती ३ ॥ ॥ ॥ ॥

जन

अभीयामासः थअमासः मिथयामासः थदमासमासः ॥ लालयलः

नवर्षागिदगवर्षागिमाउथ॥ संयाफपाउगवषः पूरसिहवदाव॥

श्री

॥ २१. ॥ मवाकाकतयकहलंकादमाः मिदसदमासदायन्वायः मिमः

पूददककासः पूरवनिहकावयाय ॥

॥ लालनादहवादाषाकाउना

दहवाउगा॥ ममात्पुडगुगिवाकाउयनउलालय॥ २२ ॥

मवाकाजथकायान मूनगदासगदयः दावजमूनगउमदयः थककावम

न जथकायमकाः पूरमिहः लसांकाउनायायमाल ॥

॥ वृत्तिमूला

मवाकाकाः पहायाविं प्रथाजनः ॥ नावृत्तिमिदमकाः पहायाविं प्रथाजनः

न ॥ २३ ॥ वृत्तिमूलाः दमकाः पहादयानकः प्रथाजनः वृत्ति

मूलासंदमकाः पहादयानकः प्रथाजनः ॥

॥ पूराहुविदि

三

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

२४ ॥ इतीति कन काय शास्त्र पद्धतं आनुस आनु नीति स लडा

श्री लोचनमालासनमान्याय नमः ॥ पृष्ठद्वितीयः ॥

हृदः॥ य० न० पु० जि० ना० या० य० पू० दि० न० दि० ॥ २५ ॥ वा० न० क० ज० पि० न०

॥ अकार्यहानि रूपं प्रकृतमिह यमकं ॥ भासु मसु सदा अरुणा इयमा ॥

सिद्धिं गच्छन्तु भक्तान् राजानं ययानं मानायायुः दिनयमि गच्छन्तु सदाधकं

॥ बुधः शक्रि यमां यज्ञं किमाययेत्यथाकनं विष्णो यन्त्रवद्यं थलि

४०॥ वक्षीय विवर्द्धिता ॥ २६ ॥ अथ सप्तमः पादः ॥ श्रीगणेशः नमः ॥ अथः

नः ३३ द्वायन ३३ साः यंथन ३३ सायका नमः यम ३३ अन (थ) ॥ नमः सायका

रुचिर्नन्दयः वृषत्वारुचिर्नन्दयः उभयगुरुवर्माहानः सानत्वारुचिर्नन्दयः क॥ २

आन

लोककर्मसंगीतन विद्या (माता) लोककर्मसिद्धिद्वयः धन (माता) लोककर्मसंयान्त
गन ॥ ॥ सकल धर्मयुक्तं यः पश्यति सा धर्मयुक्तः ॥ यः स धर्मयुक्तः ॥

ॐ

॥ दंष्ट्रादिग्रहलंघनशुद्धिद्वयसंयुक्तं ॥ ३१ ॥

पञ्चविंशतः शतं धातुः पञ्चसंख्यगणः पञ्चधातुः पञ्चसंख्यगणः ॥

नाह्युगिखवाभव नहिनिआयहानव॥ यत्रमायमहायाता नहिपाः

शामयदविश ॥ ३२ ॥ ~~उक्तं यथा मया~~ समग्रं सर्वं त्वं त्रमरुडा पायासं

हृत्थाकनशुभं चकनस्थानीसाकमन उक्तागयागच्छिदनमाता ॥ ॥

॥ कनकमण्डपः ॥ यादनेकादशमः ॥ मृगभूमिः संकल्पः ॥ घनाक्षयः ॥

कर्मसा ३३ ॥ ~~नमो भगवते वासुदेवाय~~ दिनपतिं शिवाय कस्तूरपूजया कर्मसा

कवापुनंगमक पादहि श्रुतवक्तु मातनमाक दानयाशंदिनप्रति श्रुः

नान

छिडनमृदाकिनंगमक॥

॥ अत्र नानां महिमाभिः उच्यते नित्यं पालिः

काः अत्र नानां महिमाभिः पालिः नित्यं पालिः ॥ ३४ ॥

श्री

सपानिनक्षालकिज्जमनानः न अस्य दानमाः गच्छन्तं कृपया खंसता

हः सपानिनगच्छन्ति किं उच्छागया मर्थना ॥ ॥ गते वधे भः

नेवीयाः गतेऽपर्वतमावृता ॥ गतेऽपर्वतमावृता ॥ व्यापामथ गतेऽपर्वते

४॥ ३५ ॥ ~~विद्यामनन~~ पर्वतमावृता धर्मदयंक्रमः अथा

यसः धर्मवृत्तहृन्त्यापमाना ॥ ॥ युद्धयुद्धययाविद्या पृथ्वीवर्धन

नवा ॥ अथवाविद्यायाद्याः स्वयंभवापनमया ॥ ३६ ॥ ~~विद्यामनन~~

धर्मायकायन युद्धयुद्धययाविद्या पृथ्वीवर्धन

नविद्यानः अथवाविद्यामविद्यामिदानी ॥ ॥ अकायकययाविद्या

शानः

[illegible]

॥ किं कुरु विभासतः दिव्यासी नमुमानवशा नृद्वसी नाचिविद्यां स
 ४२ ॥ यममनसः कुरु अन्तर्यामि अक्षय विः
 याहीन कुरु जवा विद्या सततम् अक्षय नमो देवपूजाया च ॥ ४३ ॥
 या ॥ ॥ नावा श्रीवक्रवर्णिना यावत्पावनं गच्छति ॥ ४४ ॥
 गच्छ पावनं कुरु यक्षिण्य जना ॥ ४५ ॥ विद्या कुरु यक्षिण्य जना

नान
ॐ
श्री

मपातयायथं नाम पातयायधुनयस नाम नरुधुयजन॥ ॥ युगाः
४ सर्वपुत्रक पिष्टवं (मनिवर्थक ४॥ वासद वं नमस्तुति वसद वं नमस्तुति
॥ ४४ ॥ **युगायकासकरुनं** पूजायाक मासवदं धाय मद्र ग (थवस
दवयाकाय वासदवसकस्यनं पूजनपन॥ ॥ युगाः ४ कर्वालिहय
त्वं इवपिवसतां समा॥ करकी गन्धमायायं स्वयंगच्छति घट्टयदा॥

१४

४५ ॥ **युगानममकमयमिज्जि** मापातयानसां ग (थदस्ताः
नवायसा कमकिस्तानपातामनाम रुमयममथो॥ ॥ विद्यासु
नपत्तं नदिउत्तापयकमशास्त्रद (मपुजितामाया विद्यासर्वमपु
थ॥ ४६ ॥ **विद्यायायाया** विमद्रुता याजाकुरुता थडादमम
रुक्मान्याय विद्याकुरुनसकरुनमान्याय॥ ॥ नरुनापिसप

वन

उम विद्याय क न साधना ॥ क न प व सिंदन व नु ने व प का म न ॥ ४० ॥

स प उ क न दा स ॥ **क न न म क** विद्या न मे य क न दा उ ॥ ध म प उ न ग थ ॥

थी

प न मा स या व न मान वा वि प का म न यो थ ॥ क न प का म या य ॥ ध म प उ ॥

१५

सिंद ध क ॥ ॥ विद्या या ला ज न क थि क क थि उ व या ला ज न ॥ उ र मा ला ज न

क थि ॥ **क थि ना र य ला ज न ॥ ४१ ॥** ॥ **उ नि चि न म न षा विद्या य म ॥**

न ॥ **उ नि चि नं उ व र क थ न ॥ उ नि चि नं ॥ भ य ता भ त ॥ उ नि चि नं न मा न ॥**

ध म ॥ ॥ न म कि र लि ना व क्रा ४ न म कि उ मि ना ज ना ॥ गु ष का वृ ॥

क म र्व क रि य म वे व म न ॥ ४२ ॥ **॥ सि म अ सि मां ॥ क क क ॥ उ मि म**

प व पं क क क ग द सि क क ॥ न व यं स की अ ॥ ला क ध न ॥ म र्वं थ थं ॥

न रि क ना मि व न्वा मि ॥ सं क्हा का ल प थ अ थ ॥ ला स व मे थ न नि डा क थ ॥

यत्

३३

स्वाध्यायभवत् ॥ ५० ॥ **॥ अथ सा कर्म संख्या कालसमायमनं ॥**
 व श्रीसंताग दुडुअयक आरवसमन धनिसंका कालसमन ॥
 श्री सादवाजायकवाधि गर्लकं अजायत ॥ अतस्मीक श्रुत्यां संपा ॥ ५१ ॥
 यूप ४ य ४ ॥ ५१ ॥ **॥ संख्या कालसमायमनं ॥** वागदय मेधन
 यामसा मलीकगर्वदुर्ग दुडुअयकससा अतस्मीक श्रुत्यां विद्यामन ॥

१६

साध्यायकीनश्रुय ॥ **॥ वदवदा रित्वहा जपदा नपवायम ॥**
 श्रीगीर्वाणपथानिप नपवाहः युवादिम ॥ ५२ ॥ **॥ वदवदा रित्वहा जपदा**
पदा नपवाहः श्रीगीर्वाणविशद ॥ ५३ ॥ **॥ वदवदा रित्वहा जपदा**
पदा नपवाहः ॥ पाहसि (अमदी पाल छिउकर्मविवर्जित ४ विचरु
 वपविष्ठागी सम ४ खंममं स ॥ ५३ ॥ **॥ वदवदा रित्वहा जपदा**

ज्ञान

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ वासन कर्ममया कविपरिसमाप्तिः ३३ खमखडहिलान
पूम् ॥ ॥ कलगीलउ (का) धरुः सत्यधर्मपरायणः ॥ एवीनय सदादका



योगाश्चक्रविधीयेत् ॥ ५४ ॥ कृतवक्रः गीतवक्रः युगवक्रः सद्यः
वादीः धर्मसत्तत्तयः नीलिसंघः समस्तसमर्थः धर्मिन्वक्रः राजायाय ॥

वादीः धर्मसत्तलपः नीलिसंवः समसं समर्थः धर्मिन्वक्रायायाय ॥
॥ कुर्यात्तानि नैलध्वः श्रयगर्वमदाई वा ॥ श्रुनामव्ययकक्षेत्रः नाधिप

॥ कृष्णगणितैलक्षे श्रयगर्वसदाई वा ॥ अनामकयकईवः नाधिय

मृनिआऊय॥ ७७ ॥ ककुपः वामनिः ललिः श्रुकाविः श्रुतातिः

श्रीयमह्वसोऽयययाकमः धधिंयमः मजायायमकः ॥ ॥ मलवः

त्रिदिनाधीन ४ सर्वत्र लयविरुद्धः ॥ अविश्वव्यापसायीतः धर्माव्युत्तिथीयः

॥ ७६ ॥ सकल साधिकाः सिद्धिं लब्धुं समस्त भक्त्या विप्रैः साधयन्तः ॥

ॐ विष्णु यादव नमः ॥ ५ ॥ विष्णु नमः ॥ ५ ॥ विष्णु नमः ॥ ५ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

श्री

तास्यासः सर्वः ॥ प्रियदर्शनः ॥ आर्याश्रीसुखसाधनः ॥ षष्ठे शविधीयकः ॥

॥ ॐ ॥ श्रीनगवेशगामुसमस्यामयाकः ॥ नाडीरुतुसुता समस्तस्यः ॥

श्री

अस्त्यदवायापः ॥ गीतस्वरावलीकः ॥ धार्मिकसमस्यायामवेशगायमानः ॥

॥ ॥ प्रियपितामहदयः ॥ गामुदीपिष्टपात्रकः ॥ अविश्वकथिनः ॥

वसपकावः ॥ युगस्यकः ॥ ॐ ॥ अज्ञावद्वनिसंस्तमर्थगामुसताः ॥

१६

परवलिष्टः ॥ अविश्वकथिनमहताः ॥ धार्मिकसमस्यायामवेशगायमानः ॥

महद्वकृष्टदीनार्थः ॥ लघुदक्षिणायात्रः ॥ सर्वगामुसमस्तोकीः ॥ षष्ठः ॥

स्वकउद्यमः ॥ ॐ ॥ आखनसुताकुतः ॥ अर्थलाभनयः ॥ आखनलीपिः ॥

हीनः ॥ आखनममममममः ॥ श्रीनगगामुसमहताः ॥ धार्मिकसमस्यायामवेशगायमानः ॥

कयायः ॥ ॥ ॐ ॥ अज्ञाकावकत्वः ॥ वनवालिष्टदर्शनः ॥ अज्ञादीसः ॥

वाच

श्री

दादकः पतिव्रतः स उवाच ॥ ६० ॥ तावन्तं कार्यं या अनन्तरं यमस्य वल
वत् स्वयं यथा पृथिव्या वीकः सक्तं समर्थं दत्तं पथि गच्छेत् विद्वत्पुत्रः
य ॥ ॥ समस्तं सक्तं सक्तं ॥ पतिव्रतः सक्तं सक्तं ॥ विद्वत्पुत्रः (गौर्ययु
(मायतः सनायका विधीयते ॥ ६१ ॥ समस्तं सक्तं सक्तं पतिव्रतः
कृतः धीमते व सुगतं संयुक्तः पथि गच्छेत् सनायका य ॥ ॥ समस्तं

दयमासु ह्यः तावन्तं यथा जितं धा सोर्या वीर्ययु (मायतः सनायका विधीः
यते ॥ ६२ ॥ समस्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं पथि गच्छेत्
सक्तं सक्तं सक्तं ॥ ॥ सनायका विधीः ॥ पतिव्रतः सक्तं सक्तं
धीमते व सुगतं संयुक्तः पथि गच्छेत् सनायका य ॥ ६३ ॥ समस्तं सक्तं सक्तं
पतिव्रतः सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं सक्तं पथि गच्छेत् सनायका य ॥

वान

धी

रुमयाय॥ पार्थिवम्वरुममः वदामि युगान्तरं ॥ यत्र संवत्सरं वा
जाहातागवत्तु (थेवत्तु) ॥ ६४ ॥ याजायार्कदसकः त्रियथासत्रियं कदः
याजायार्कदवत्तु प्रतयायामासः पार्थिवम्वरुमदिसयाय॥ ॥ अरुचव
कसीनानां दयां कर्वन्ति संयत् ॥ आदिसव्यावसानेषु न कयास्य किं विस्मयां
॥ ६५ ॥ नमः याजाय उनीकयः का सखे लइकः दया माया न संयः

२०

कः पार्थिवम्वरुमयाय सव्यविकारसं श्रापदाताय मरु॥ ॥ पश्चिम
पुत्रसर्वः सर्वदा पातु कवत्तु ॥ कस्तो नृखं सव्यविकारः प्राह उक्तं सव्यविकारः
॥ ६६ ॥ पश्चिमम्वरुमयाय नमः संयुक्तयुः सर्वयाय कदापि न कदा
दयिअः भक्तनः दानदिः सर्वमानमानः हानिकः कृतयमास॥ ॥
पाहनि याय कमानुः सक्तिः वाहयः युगाः ४ यमः ४ त्वर्जनिवासः ५ः

वान

कनकधनागमः॥ ५१ ॥ **यानिजानयान** वाजायानसुमायुगदय

कुकुक्षानमाः जगः उवाइहाउशिडाः अककानसुमर्वासाइय ॥

शी

मूर्खानिशासमानउः उवादासाः मदीयकः ॥ अयनेयार्थनागश्च नवकप

ननं॥ ५२ ॥ **मूर्खमयाजलपाकार्यम** वाजायानसुमादावसः

दयः जगमदः धनमदः पदुमननकवासरुय ॥ **॥ नसाइमीः**

२१

यवानिपुः धर्मकामार्थवडया ॥ युगवक्तनिजसुनः युगदीनं विवर्द्धः

य ॥ ५३ ॥ **यानिकायननः धर्ममयाजान धर्ममूर्थकाम** वाधयया

रुक्मनः समरुमासं युगआनकमजजसपमानः युगदीनमकाउकमान

॥ **॥ जलिवित्तनरुग ४ युगं वा यदि वा युगं ॥ ननसंवर्द्धकवाजा**

सुहर्षेइकनेयपि ॥ ५० ॥ यमनवाजायामलिनः सुवकनं लिह

दानः

यादानं महीदयादानं याजायागधममकृतं मथयायमास ॥

शी

जथाहमपविकृतं मापमाउन कदनेः ॥ तथा पूरुषमथवः कलगीः

सनकर्मसा ॥ ११ ॥ मथलनक्रयाग दयागः धदागः नः यः

विक्रायाय धथा कतगीतस्ययागः मनकपविक्रायाय ॥ ॥ हामः

वांयकः ॥ गहपाः वा नवावागनागमः ॥ मपकासकथामिधः कार्याकवि

२२

रुवकथ ॥ १२ ॥ सवकस्ययंका क्रायाग धागिधिपनिस्ययः धमयाः

मनीरुसदागः मिश्रयथगविपकिधनम कताकस्ययकृतं यअदमिधः

यागः ॥ ॥ रुयावद्विधाजाजन् उरुमाधममधमाशः ॥ रुनिशाकन

थायाग्याः विविधेधवकर्मसा ॥ १३ ॥ हमाहायाजः सवकरुलं स्वः

मापकाय उरुममधमः अधमः धपनिः याग्यः २ थामः जाजसपमानः

आन

॥ आनन्दमयं कुरु कुरु मणिनमः ॥ अमुं कुरु मरुतः ॥
 कुरु मरुतः ॥ १४ ॥ अनामिः रज्ज्वात्तः ॥ अनामिः रज्ज्वात्तः ॥
 मरुः अमुं कुरुः कुरु मरुतः ॥ अनामिः रज्ज्वात्तः ॥ २३ ॥
 अनामिः रज्ज्वात्तः ॥ अनामिः रज्ज्वात्तः ॥ २४ ॥ अनामिः रज्ज्वात्तः ॥
 अनामिः रज्ज्वात्तः ॥ अनामिः रज्ज्वात्तः ॥ २५ ॥ अनामिः रज्ज्वात्तः ॥

कपननशनदामः विषहानभायः भजनममसंनभया ॥ यामाः
 शर्यासभासर्वधुषकावाग्विवावकः निस्त्रदावन्धवर्गवः रुजदस्यमदल
 खं ॥ १५ ॥ कवप्रियुम्नीः मूर्खकायः काकायुक्खिनः सिनरुमडः थड
 थिथिडनसांभानमानमदासख ॥ नकथित्कस्यविमिषः नक
 थित्कस्यविलियः ॥ कावरादवजायकः मिगानिप्रिपवसुथ ॥ १

ज्ञान

॥ मिथुनं स्यात्संमयः प्रियं न संमयः मिथुनं कायं स्यात्
नः मिथुनं कायं स्यात् नः मिथुनं कायं स्यात् ॥ कार्याथीरुजः

मलाक नलाक यजमाथक शावलाकी प्रकृयं दृष्ट्वा यत्रित्पुजहि मा तत्र ३३

॥ १८ ॥ मिलाकइलं कार्याया न सावधः रुजलपिअ पयमार्थनह
जलपूमइ दयाकगधधानसा सावानमामयाइइ किमइअ हयाअ मा

मउमं॥ ॥ यूनाद्यगनिनानिडाः अरुफसाकहात्रिः॥ करः सोस्वां

दप्रिउस्य उर्जनस्य कृत्तः क्रमा ॥ १२ ॥ व्यगनस्य उर्विक्रमायाः कृत्तमदः

न संतापमइअ म्मयावतिमखमदन दविड म्मयासखच्छतामदः न इड नया

कक्रमांमयत॥ ॥ नस्यवस्यकनामाता इति नस्यककथमा वग्माइ

शुभाङ्कनक्षत्रद्वन्द्वसंज्ञाप्रकाशिका ॥ ५० ॥ श्रव्याकमानगन-इति

वानः

नया ककसागनः वग्धा मुया कपुतिवतागनः कामसलानावियाकः सं
काषगनः ॥ इर्वनमयवसंवाजा वासनांश्चदिनं वसं ॥ वसं मखं स्यभोनः

शी

लं वीयासांसनकं वसं ॥ ६१ ॥ इर्वलमया वसकलवाजा वासकया वस
कलं स्वाय मखं या वसकलं नानमवायः स्वया वसकलं मयं पखला ॥
मृनाथानां दमिडासां वासवककपश्चितां ॥ मृनाथपविहतानां सर्वेषां वा

स२

२५

वानः

धिवागतिः ॥ ६२ ॥ मृनाथकसाकासनमया वासककः काथयाऽ
मिहपलिया न्यायनिमित्तमइद्रया धरुमकलया मकिइलं वाजा ॥

शी

व्याधिरुमार्थहीनमः मफुलि४ जागिरुमय ॥ रुदयः भाकदधस्यः रुददर्म
नमोषधं ॥ ६३ ॥ व्याधिरुपिठलपूया इवहीनमयाः मफुनया मवि
आयाः रुदयसः भाकनदरुलपूकया धरुया आसनरुलं थअरु मिद्रयाया

वात

लक्ष्मणः ॥ ॥ आरुद्रवागमनपादः इति कथं विद्युतः ॥ वाजद्वय भगवाः
नवा यतिष्ठति सदा भवः ॥ ६४ ॥ वागमनकनः वागमनसद्वितः इतिः
कवलमः भक्तवित्तियरु अवनस वाजद्वयसक्तसः धर्मि धर्ममादत्त पृष्ठः
थवा वा भवधायः ॥ ॥ आवधुमिमनूपा मां हो कलं सर्वकर्मसः ॥ आवः
नरुमिमाकाका लावन इति मानना ॥ ६५ ॥ मन्त्रकथा सुद्विदुः

श्री

२६

लावया विष्णुपतः लावनकना कं यथानतः लावनका वृत्तयानतः धर्मानस
नरुं लावया कनसि यमानः ॥ ॥ नदवा विद्युतका ए पाषाणि नचम
लथः ॥ लावधु विद्युतदेवः तस्मात्ता वा मरुर्देवः ॥ ६६ ॥ सिंसुंदवमद
नादमसंदवमदः देवशानं लावनः धर्मानः लावनका धरुः ॥ ॥ गिः
वा मां देवमावा र्थाः हानमावा र्थं देवमा ॥ देवता देवता या विना रुद्रः

बान

श्री

वाक्म (ग) जनय दवता ॥ ६१ ॥ मिष्टया दव रुतं युव युव या दव रुः
संज्ञान मिस्त जनया दव रुतं थडा स्ता मि लाक स मस्त या द उ रुतं युवः
॥ विपं पश्व य भवति यत्रा य पश्व दवता ॥ एधि पश्व य थ
माता मि उ पश्व य थ म ॥ ६६ ॥ वाक्म ग स्वय रुतं अग्नि रात पाडाः
मात्रा य स्वय रुतं दवता रात पाडाः मा म स्वय रुतं एधी रात पाडा मिः

२१

य स्वय रुतं पूरुता न पाडा ॥ ॥ युव य मि विजा मीनां वरु नो वाक्म (ता
युव ॥ पति य का युव रुती मां सर्व सा स्था गता युव ॥ ६७ ॥ वाक्म ग या
युव रुतं अग्नि य मा वरु या युव रुतं वाक्म ॥ मी या युव रुतं स्ता मि म मः
स्त या युव रुतं रु स्था ग ॥ ॥ डरु न सा पि वरु सा नी नी पि ग रु मा
ग रु ॥ पूरु नी थो य थ न्या यः सर्व सा स्था गता युव ॥ ७० ॥ डरुः

ज्ञान

[illegible]

मन्त्रदिया जानं नमामस्तु वाक्मन्त्रः ॥ वाक्मन्त्राय नमः ॥ तद्वधर्मसनात्
नमः ॥ १०२ ॥ वाक्मन्त्राय नमः ॥ वाक्मन्त्राय नमः ॥ वाक्मन्त्राय नमः ॥
गन्धगन्धपूजाया नमः ॥ नमः ॥ ॥ वाक्मन्त्राय नमः ॥
मावाय्यरुतकधर्मः ॥ वाक्मन्त्राय नमः ॥ वाक्मन्त्राय नमः ॥ वाक्मन्त्राय नमः ॥
॥ १०३ ॥ धर्मरुतकधर्मः ॥ वाक्मन्त्राय नमः ॥ वाक्मन्त्राय नमः ॥ वाक्मन्त्राय नमः ॥

मान

नरुनदयिअंश्वार्यनः सकलायां हनुश्वार्य गथका ॥ ॥ ॥
संशान्तनगकिश्चरतिगकिर्वेचक्रियः विरुवादानगकिश्चः नान्यमरुः
पसंरुनं ॥ ॥ ॥ नयइमननयरुयिअं हीरुसुइमनः काम
शगरुयिअं उवाइमनदातयायिअं भक्तगअं नपयाइमननतिनिययि
अं ॥ ॥ वासवेवचनधर्मः सनियखसुजीविनं ॥ ॥ रुतानामपि पः

अ

२०

काशं गश्चतं पतनं रुव ॥ ॥ ॥ ॥ भमंसायश्चनियसत्याअं वासकः
निसंधर्मयायमानः कानधालमाः सकिनकासः यतनइयअं भभंकाः
थरुनकासमायुअं ॥ ॥ सदमः यदकाधर्मकाः धनेवदुतं नय ॥ ॥ अः
इरं चरुं नानं यमादनरुतं अं ॥ ॥ ॥ ॥ अदंकायसधर्ममअयुः
नयं मअयुकाधनः हानमअयुअं नः विरुथीलमइतदामः रुकाः

वान

उत्तमायिडाहृतं श्रुतं हानं ॥ ॥ श्रीफा (मोहकाहो मोहनाः

उत्तमायिडाहृतं श्रुतं हानं ॥ ॥ श्रीफा (मोहकाहो मोहनाः

श्री

मिमकासयादाहानं कृपयाजनं साक्षि सथासनयान्नरानः भवयाशाः

मानशुआयाकनाहानः थअअनिमिहिनयादायाखंवृथा ॥ ॥

दाविडयाधिश्रुतानिः तन्धनं वागनानिव ॥ वादातुहृतममानिः रसाः

30

दानविमिषक ॥ ॥ ॥ दविडश्रुययाधिनश्रुतयः सदाहृतधनः

पेशानः व्यगतिश्रुयः धनदानमयादायाययाहृतनः धनदानयायमा

न ॥ ॥ पुनकावृधानाधृपश्रुतावृधकुरुषु ॥ गादगलमनः

षधः यनधर्मवदिया ॥ ॥ ॥ वासककहथाः अनुसमानि

वृथिथः मनुष्यसं (गाधनधर्ममदनः अयावृथाजन ॥ ॥ गृज

मानः

इह नमस्तस्मै कृत्वा साधुमन्त्राणां कथयन्तः साधुनित्यनित्यः
तां॥ १०० ॥ इति नमस्तस्मै कृत्वा साधुमन्त्राणां कथयन्तः

श्री

साधुनः धर्मसाधुनिधः साधुनित्यनित्यः॥ ॥००॥ इति नमस्तस्मै

३१

वसन्तः प्रथमः भक्तकर्मसाधुः॥ १००॥ ॥००॥ साधुनित्यनित्यः

विद्याः नमस्तस्मै कृत्वा साधुनित्यनित्यः॥ १००॥ ॥००॥ साधुनित्यनित्यः

विद्यामिरवाहनां साधुनित्यनित्यः साधुनित्यनित्यः

दः कृत्वा साधुनित्यनित्यः साधुनित्यनित्यः॥ ॥००॥ ॥००॥ साधुनित्यनित्यः

पुस्तकमगमः॥ साधुनित्यनित्यः साधुनित्यनित्यः॥ १००॥ ॥००॥ साधुनित्यनित्यः

धर्मिष्टकर्मसाधुनित्यनित्यः साधुनित्यनित्यः॥ ॥००॥ ॥००॥ साधुनित्यनित्यः

अः धर्मनगः साधुनित्यनित्यः साधुनित्यनित्यः॥ ॥००॥ ॥००॥ साधुनित्यनित्यः

चान

वसवद्विपयाक्रमे॥ ५७ ॥ यस्यामिष्टं मि तस्य दवापि भंकि न ॥ ३ ॥

श्री

उद्यमसदाः (धैर्यं) वसवद्विपयाक्रमे भवतायुगं यवक्रयाकद त्वाक्रवः

कानदवंसंकावा ॥

॥ सामादाननरुदनः क्रमराववसनयासर्व

वसुसदा भवः घाठनीयातयाधियः ॥ ४ ॥ उलाकानंदाननं रुदनं

यत्ननं वसनं समसुतं राजान भवसाधनधमान ॥

॥ पाठत्यागी

३१

यु(म)वागीः आगपमिजने साह ॥ गामुवाधाय (म)वाधनपक ४ प ३ नक

मं ॥ ५ ॥ सपाठसत्यागी रुयः युगसतागलय नयत्ननसपमिजने ३

नाय गामुनवाधरुयः वनसकाधरुयः धर्मागसुक्रमः राजानध्वप्रलयः

साय ॥ ॥ उरुम ४ यमिपाहनः भवराहदन याज ७ ॥ सवमर्थपदान

नः समुत्पपयाक्रमे ॥ ६ ॥ उमपूयपअः कलाठाठाः यववम

३

यानः अतदन्तः सा हि सुहृन्निदानविद्याः समुत्पत्त्यस्तु अतः पयाकमत्रं सा
 धत्तपं ॥ नो सा हि उं पयविद्यातुविद्याहि उं पयस्यत ॥ यस्तु कर्म
 ॐ वीमानिः पयसावन्मयकथं ॥ १ ॥ यस्तु दः कर्मकनः सियकम
 मः अतः यानगमः थमनसायः मथकापसनः वनसपिरुअयिडाः वः
 नसद्विद्वानिडा ॥ ॥ मनसा विनयः कार्यः वनसानयकाभय

३३

॥ मनुजकर्मगृहान्ताः कार्यसिद्धिद्वयायक ॥ २ ॥ मननकार्यविः
 कर्मपमः अतः याननयकाभयाममः मनुजकर्मगृहान्ताः कार्यसिद्धिद्वयायक
 र्थसिद्धयिडा ॥ ॥ उपकारं गृहीतं न भवति मपि मूढय ॥ पाद
 सनकयस्तुनः कर्मकनेवकं ० कः ॥ ३ ॥ उपकारं गृहान्ताः मः
 नयामकर्मः मथकापसनः कर्मकनेवकं ० कः नपूतकाय ॥ ॥ वः

वानः

श्री

हृदमिउत्तं धनं यावत्कालं विपर्ययः ॥ १० ॥ **॥ यउमउिउा नालः गक कव मरुय सानः थउः**
दाउ सता नका सः ग। थसा दा मधन पा माउ रु या थं माउ रु या उा गक
मावक ॥ ॥ हजि कक उक स्ररः मधुवं किन्न राषम ॥ मधुवं वदः
कस्या मिमा कानां मधुवं प्रियः ॥ ११ ॥ हजि काः पा न व व न स का य वः

३४

स वा क व व न का य म का दा वा क व व न का उाः क न वा न सा ला क स म सं वः
वन प्रिय ॥ **॥ जि का ए व स ग न श्रीः जि का ए मि य वा ध वा ॥ जि का ए यः**
व ध न श्र पिः जि का ए म व गं ध वं ॥ - १२ ॥ न श्री वा नी उां म वा सः रु य मि य
द यि उां म वा सः व न न रु यि उां मू उ नः म लू रु यि उां मू उ नः ॥ श्र न स म संः
मू उ स ॥ ॥ प्रिय वा क य न नः सर्व उ घ मि ज न व ॥ क स्मा रु द व रु

वातः

तवाः किंवाकनदविडगा ॥ १३ ॥ वाकवचनज्ञानः समस्तभावः संः

कुष्ठरुगिअः भक्तनक्षायवचनयादविडरुया ॥ ॥ अग्निदागवदये

गी ॥ अः भक्तुपासिधनायरा ॥ अजदायापरावीवः षड्भक्तुभायिनः ॥ १

३५

४ ॥ मिवालरुअः जसनकसरुअः भक्तुजाडाभातकययादरुअः धः

नयययादरुअः कुमनलसरुअः भवयातित्रिदुडाअरुअः भवताः

सक्तुभायानसां भक्तुभायिधाय ॥ ॥ आभक्तुभायिनसायानः संः

पिधदानपात्रगं जिडासनं जिडां सीयाः नक्तुवक्तुसरुव ॥ १५ ॥

आभक्तुभायिरुतकासः वदपात्रडादक्तुवाक्तुसरुतसां थडाभायकनगमुजाः

दडाअनकासः थस्यादानं यापमनाकरुता ॥ ॥ वाधुपात्रयक्तुनिमः

सक्तुधर्मपयायनः ॥ निर्जितः पत्रसेनानिः पतिधर्मसपात्रय ॥ १६ ॥

वान

वाजानमस्य धर्मा जादाः क्रिधं यमा पातनया यमातः सजानपर्जा पातनया
मदासः पयसेनां जपतपदुय ॥ ॥ पृषां पृषां विवीनीमः मृतकः ॥

थी

दानकायथ ॥ माताकायः वांगानि यथा यातातिमात्रमां ॥ १० ॥

३६

वाजानमलियाकत्वकायमासः गधमासमा हाकस्वानथयः हावाठाः
स्वानमास्यायमकडाः श्रुथं वाजानधर्मा थदुयायमासः ॥

श्रुतिमिह मया सीनः सधस्कृतिविशुभशः शानवधमिमन्दात्माः सवस
वैविनश्रुति ॥ १८ ॥ यममनघानः गदुः कामिदयायिअः सदाउदासिः न
मसजः श्रुतश्रुतममनः श्रुतमरुवः सकमासंरुयिअः ॥ ॥ श्रुनाः
यवयकर्कवः श्रुनाथकनरुपियशः श्रुतुप्रसर्वरुकीवः नवठग्युविन
श्रुति ॥ १९ ॥ श्रायमस्तस्यंदाययाकमः हृदमानमः कलदयाय

यान

तस्य गगनकलसकलानयनशुभं यत्तदा मधुखमायुः ॥ कः ३३
कालकानिमित्तानिः कादभकावयागमशाकल्याणकानमगकिः ००००तिनि
नामरुर्म्मर्म् ॥ २० ॥ एतिस्रनथ (थ) एतलथ (थ) मालः कायधायक धक
समिधः सगधः दभगनकः दूतकः दकः ॥ तिसयाडिगननअयागन
अनः धकः सयाः तिसमर्थकः धपकायनगलनपरमास ॥ सिद्धा

या

३१

दकं वकादकं गिधवत्वाधिक कृष्टान् ॥ वायसान्धं गिधान् ॥ षष्ठ्या न ४ क्री
निगदताम् ॥ २१ ॥ सिद्धया कृष्टा युगमनः वादया कृष्टाः स्वाया
कं धताः कृष्टया कृष्टाः खिन्नाया कृष्टाः गार्हया कृष्टाः सनमास ॥
पञ्चकार्यमन्यवाः यानवकडुमिष्टमि ॥ सवांरुषुत्कार्यः सिद्धादकं वि
धीयत ॥ २२ ॥ धमयादाकार्यः विक्रधनसांः कडाधनसांः सिद्धाधं स्व

दानः

शी

नमान यादाकार्यमसिधमान सिधयक नमानयाय ॥ ॐदिया
निउसंयस्य वकतन्यलिमानत्रशाकार्यकासापेपन्नानिसर्वकार्योसिसाध
य॥ २३ ॥ वाहयथांयलिमननयनः कार्यथथयाय थअत्वाथस
मनाकमान ॐदियदकनियरुयायैरुदानः थअत्वाथसनामकानः सः
मरुकार्यसाधसथ ॥ ॥ याकाकाननययुहव सोविलागकवव

३८

षासुयमाउजीनः गिषावत्वायिककृदाक ॥ २४ ॥ द्वाथयकंदन
यउसतयावइय थअथिथिमवाखावासापमयाय मुसिहिकनन
य थयमाखायाकसन ॥ ॥ गृहमेथनधृष्टनः काननवातसंय
रु ॥ अयमादीसधृष्टक यंयगिषाववायसात ॥ २५ ॥ युफन
उमेथनयाय लन कानन थअवष्टिसंयदयाय अमादीसइअधृष्ट

मान

यः श्रद्धांतायुतः कृत्स्नयाकसनः ॥ वक्ताभीवात्यसंतुष्टः सतिताभी
प्रवक्तवः ॥ स्वामिरुक्तयश्रवयः पठुमश्रवमायुता ॥ २५ ॥ दमसाः
श्रीपातंनयः सदाकदाअसितासनंसंतुष्टः तत्काननकदअयकरुआन
नानंदतुनवाअः स्वामिरुक्तिश्रवः श्रवमाखितवायाकसनः ॥
श्रुविश्रान्तमहदायः शोभासंवनविन्दति ॥ ससंतुष्टः तवनिष्ठः प्रीतिभि

श्री

३६

षात्रगर्दरातः ॥ २० ॥ उत्तिक्त्वापानंजातुमवाअः विद्याभमयाक
तापंसंश्रुतिः विद्वंक्षयिअमष्टः सदाकसंतुष्टः श्रद्धांतागध्याकस
नः ॥ विंशत्यमायुता ॥ ४० ॥ काः वदुर्गादिचक्रमः ॥ रुडिष्टानि वि
पूनार्वानविजयश्रुविच्यति ॥ २६ ॥ धनीयमायुतः ॥ गमसून
धयसपिअः अमनसकन्यागकः जयसपिअः जसकयुअः ॥ ॥ श्रीः

यानः

सूक्ष्मात्मनः पञ्चाङ्गः सन्त्युसं ह्यथ न सा ॥ यत्र सा वा पञ्चाङ्गः पञ्चाङ्गवति वि
युक्तं ॥ १९ ॥ **सूक्ष्ममद्राहणीयनिमन्ययाः प्रियदहनं सां विधिं**

थी

यकावयायि यथा ॥ ॥ न कादव यथानीवा यत्र वतिमदा नृवा ॥ ॥ २० ॥ **प्राथम्यं**

४०

सादितावत्तमं ॥ ॥ नृवा नृवा वपकि ॥ ॥ ३० ॥ **प्राथम्यं**
मिनन (गालः) समस्तवत्तनपंशुः ॥ ॥ नृवा नाममगलः ॥ ॥ यथा (यथ) मनवेति

इयाडा नमस्तुतं भवतादति ॥

॥ आगतसति कृवीनः यनकः

नापि सदिनः ॥ ॥ नृवा नृवा वपकि ॥ ॥ ३१ ॥

यथा नृवा नृवा वपकि ॥ ॥ नृवा नृवा वपकि ॥ ॥ ३१ ॥

सपनडा ग (यथा) दसिधावसाः ॥ ॥ नृवा नृवा वपकि ॥ ॥ ३१ ॥

पूरा पूर्वकालसंथीयामसनः गुरुजयनप ॥ ॥ ३१ ॥

॥ इष्टवसागवन् श्री

वानः

समयवानवतन॥ मृत्तुपूर्ववाभन मृत्तुनक्षत्रसागय॥ ३२ ॥३

थी

इष्टनः कृतनपमजीअममृड वानवनवनसंयदयादाडा पूर्वकानसवाः

मवदुनमाकृडासागयपातयाक समरुदयाडा॥ ॥ययंम

कवयंयधविशोधशपयस्यं पनेयाकममावाड वयंपक्षरुवंग

न॥ ३३ ॥यधिविवायाजान इथाधनदाडा रुकिजाकपनिमः

४१

ककिरुकिजः अपनिदास्ररुकीजः मृत्तुनक्षत्रसागयनाधनसागयः दः

नः मवतनखायकडाससाः कयनिगककिंः अपनिदाकंतापयानधकः

॥ ॥दित्वाहित्वावममनिरुत्वावेविममानक॥ इतय४समना

यानिः य४य४य४य४वम॥ ३३ ॥वेविगाः मर्मस्वयकडा रुद

कायकडा वेविमर्म रुदसुतकाडाअकिथडाः पत्रमपयं॥ ॥

मानः

श्री

विनाहप्रामन्यामाः सन्धानमेधनं कथाः सोलाग्रद्वयलीभाः वसुधाः
नारपद्वयं ३५ ॥ मन्त्र्यायाद्वयसंविनानाः सनयाद्वयमेध
नः स्त्रीयाद्वयसंविनानाः सनयाद्वयमेधनं ॥ ३६ ॥
उवा मन्त्र्यामाः सनधावजिनाः उवाशाग्रमेधनं उवा स्त्रीभाः सन्धानमे
धनं उवा ३७ ॥ मन्त्र्यायाद्वयसंविनानाः सनयाद्वयमेधनं ॥

४२

मन्त्र्यायाद्वयसंविनानाः सनयाद्वयमेधनं उवा स्त्रीभाः सन्धानमे
धनं उवा ३७ ॥ मन्त्र्यायाद्वयसंविनानाः सनयाद्वयमेधनं ॥
३८ ॥ मन्त्र्यायाद्वयसंविनानाः सनयाद्वयमेधनं ॥
३९ ॥ मन्त्र्यायाद्वयसंविनानाः सनयाद्वयमेधनं ॥
४० ॥ मन्त्र्यायाद्वयसंविनानाः सनयाद्वयमेधनं ॥

दान

श्री

धृतिनकदृक्कतांमइ॥ ॥मर्थिनावाधितामर्खपवासीपवभव
कः॥जीवितापिसन॥येवःपवेनइ॥खलागिन॥ ३८ ॥दयक
उयादृऊउ॥सदांयागिःसर्वःसदांयामगमनरुयःभवयाश्रुधीनसदा
भधदाताःइ॥खलागीक्षयःधपनिस्वामाःसिकथां॥ ॥यायः
उतिन्यमायामिउकंवापिदिनदिन॥सकृत्तदुमांयानिःयदिगकत

४३

दानव॥ ३९ ॥(गामनन्याःनित्यतायाताःनित्यनयिताः
धमनन्याः००नुतुस्यरुनसाःउमुतिथामयादुयडा॥ ॥प
दानपववसुवःपवपानपवसुय॥पवसवश्चदवासाःभक्र
सापिथियंद॥ ४० ॥भवयाश्रुन्ननयत्वनःभवयाकसु
नकियःभवयालिकायःभवयाकसवानःभनिइलठाउः००नु

वान

याधिं सम्यक् इति सांख्य ॥ ॥ श्रीगोपानिर्दिष्टाविज्ञानः श्रीगोपानि
युक्तवान् ॥ श्रीगोपानि विधवा नात्रीः पूज्योऽपि मित्रि मा ॥ ४१ ॥

श्री

श्रीगुवि इति संयुक्ति कुर्यात् ॥ दानिद इति श्रीगुवि इति संयुक्तमद्वैतमनः
वाहनं श्रीगुविधायः काननामद्वैतमिताः कायकृद्यदकसां ॥
विरुवा सर्वपूजकः नगरीयासिद्धिदिन ॥ वा ॥ तापिनः प्रोक्षः यस्या

४४

स्ति विप्लवधन ॥ ४२ ॥ मनषान्नमनषापूजामयाकः सवत्समनंद
यथाकापूजायातः वा ॥ स इति सांविप्लवधनधनम् ॥ ४३ ॥ धनया ॥
धनमाह पञ्चधर्मः धनेः सर्वपतिष्ठि रथा जीवति धनिलाकः समाधयवत्तः
धनानया ॥ ४३ ॥ गडाधदधर्म इति धनः कानधालसाः धनयाः
वलनसकः संपत्तिष्ठातः न्याकयाख्या खं सधन इति धनमद्वैतमक

वान

तासं निस्तुत धनधनसादयायमान ॥ अतिसंमयदसायनरु
तवांपरनादयं ॥ अमुचमिस्वशमवः सतां वज्रपाकिरु ॥ ४४ ॥
अतिरुतासंपदिकुनडाडाः द्युयडाकयनग्यायमान गथाधालसायः
मिवाजाडानः समवपर्वतंवज्रनकयकल ॥ कारुश्रुतककोति
नः कामखनिचमगिना ॥ यस्याकार्यान्तसंडुष्टाः कवतस्यात्तवगृह ॥

श्री

४५

॥ ४५ ॥ अयात्तनवदुताक्रयाः रुतामरुतागतः सदांशगी
नयासखगतः ॥ माक्रयासान्तसंडुष्टमहत्तः अक्रयाकसकसख ॥
मोतिषाकषकानिस्तः सखनिस्तमयागिनी ॥ कार्यारुर्दुवसायस्याः रु
स्यनिस्तान्तवगृह ॥ ४६ ॥ क्रिपः तीठठनयाडाः अशगीरुयाडाः
आठयनिसधमिधायसस्ति दनं गवक्रयाकलानवसासदयाडाः शानताक्र

अन

याक सनिगुडत्तवधाय॥

॥ सर्वपात्रवशं इह खः सर्वमात्तवगशस

खं॥ एकद्विद्यात्तकसननक्रगंसखइहखया॥

४१

॥ सकलाया

थी

सिनइहखइहखः सर्वगइहखः कृयासिनसखइहखः थडावसासवानः सख

याइहखयात्तक्रगथनिसिय॥

॥ सखस्याननयइहखः इहखः

स्याननयसख॥ सखइहखमनूषासां चकवत्यविवर्द्धक॥ ४२ ॥

४६

इहखइहयिडा सखयात्तक्रगस सखइहखः इहखयात्तक्रगस धकन

मनूषायासखइहखइहखः कृत्वा नयावाकनदलथं॥

॥ वदति

सखसंघाते यस्यानोपुवदिक्रिडा क्वादयनियुगान्तर्वा भयेविवदिः

वाक्य४५

४२

॥ अदीकमुखमदवान सनिक्रमनकावायुस

भयनसूर्यत्वकपायाथं निरुगयाय॥

॥ असमासदसांग

मान

थी

नः कानयात्पधमापति॥ यथापि गोत्रिनीदक्त वात्रगीत्यतिधीयत॥ ५० ॥
कंसंगडासंज्ञयादानः अधर्मगतिरुचिडा गथेधायसाः सलीनन इडजा
दाडाहनसाः मयपानजा दाडालकायिडा॥ ॥ असत्तं पक्कं दोधग
अधमायातिसाधवः मार्गस्थितिमित्रसेवः समापिविमसायत॥ ५१
१ ॥ असर्जनवानानः साधयति असर्जनकायः दृष्टान्तगथमाधन

५१

आदल अंधकायसः साधमडाठथंवान॥ ॥ उरुमेऽसदसंगतः
कानयातिसमन्तकि॥ सड्दरुत्तमानिधायकः यत्किं कः कसंभेऽसद॥ ५२
२ ॥ उरुमज्जनयासंज्ञयादानः सड्दरुममरुचिडा गथेत्त्वानयासं
सर्जगः यासमुद्धागिनसदजान॥ ॥ किंकपिचकिंसंपक्कऽस्वलाः
वाडविमकमभापश्चात्तरुनसधक्काः कथायानाम्नांगति॥ ५३ ॥

दान

संस्तुतं यादवज्जाय सत्तव नंदनया यमजीउ। स्वअः आपंया इउमवा
६ पृष्ठाक यादवकः सत्ताव वमुथधि ॥ सत्तु प्राव सवः सनः ॥
मल्लनिम्बप्रमिद्धि ताशा सधनी यमसावर्कि निम्बकिं सधवा यम ॥

श्री

ॐ ॥ सागल सनिम्बपिडाउः यउ दिगडाः यनकहि साप्रविगाअन
मं निम्बवाक क मजीसं सत्ताव का यथधिद ॥ ॥ पृष्ठाक घनयाः

४८

विद्याः पयदर्थयदना कार्यका नवमं पाफः न साविद्यानकधनं ॥ ७५ ॥
सदृ निरयाठविद्याः पयदरुस यादधन निरु नवाय कार्ययाः सत्ताम
ससः उआसुं सउः उधनं सउ ॥ ॥ इवका निरमिजानि निरुः
सनिनवा नवाशा विप्रथा अनकर्कचा नथमो निरुला विव ॥ ७६ ॥
सापासवाठमिह सनन सउवा नवजन धनमाय यान वन सनिमः

दान

श्री

न॥ ॥ अष्टादशपुष्पातिहवस्त्वपिदिवाभवाशाकानावातः
स्वयमथ यथासनापनिष्ठमि॥ ५८ ॥ वनमशादमिमात्मानः का
पासवाहथआधिधिः वृद्धाथआकासममइत॥ ॥ यश्चाववतदीः
नस्यः कर्महीनस्य आनवशनिप्रथमनाकस्यः रुतस्याहृतशौर्यथाकः
॥ ५९ ॥ अर्थमइववनः कर्महीनमनषा ध्यादिनातनमेः

५९

निसृजः ननियादामः आहृतिवियाथा॥ ॥ अगयुक्तमपी
आहृदम्यस्याकलदमथाः वत्तायनिषुलायामि यताममद्यउववः
॥ ६० ॥ आनसयालापः मीपवृषयात्वापः अपीपनिसः
आहृसथअआमः अथतानिसृजः नक्षय॥ ॥ अहिरवममहा
गीकः अहृगप्रसवर्द्धिताः अमिषयवकलुंवनवकस्यापवावधिरुः

रात्र

श्री

॥ ६० ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भक्तिकलात्मकमहाभक्त्युपाध्यायः
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ स्तुतं जंघा उदात्तमाः लक्ष्मणं गंगेश्वरं गङ्गाः
मितः दानकगीयदागीताः कदाकं २४ खलागिनः ॥ ६१ ॥ नमः
ब्रह्मया खलु गङ्गाधरः नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ वरकस्य दयकस्य ज्ञानगीताः
या कर्मगङ्गा २ एव भवति इत्युक्तं गीतम् ॥ ॥ निरुत्तापः पद्म

५०

वा निरुत्तापः वासुदेवाय नमः ॥ इति श्रीमद्भक्तिकलात्मकमहाभक्त्युपाध्यायः
॥ ६२ ॥ कथं नया कर्मवाया दानः भगीया कथिति इति या कमी
नः बाह्यमनदकापदार्थभक्तनिरुत्तापः ॥ ॥ वरयत्कलजं प्राज्ञः
विष्णुपामपिकल्पकाः ॥ ॥ प्रपत्तिनीतनीतस्यः नेवाकमदसंकुपः ॥ ६
३ ॥ इति नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सकलसङ्गायनं पद्मकं ॥ ॥ प्रपत्तिनी

वान

रुससांन नीवयाक कंन्याकायमरुडाः धरुनजात्रियाकमाव ॥

विषादप्यमरुंभयः मभवादिपिकाः न नीवादप्यरुमांविद्याः स्त्रीवनः

श्री

इष्टसादपि ॥ ६४ ॥ नमसवानसां मूरुकायमरुडाः मूरु

विधासवान लं कायमरुडाः नीवयाकवानसां उरुमविद्याकायमालः

महीठकृतमवानसां स्त्रीवनरुसठासकायमरुडाः ॥ कस्यः

५१

शेषकृतनामि व्याधिनाकानपीठिगाशकनरुवाभनंयाफंः प्रियशकस्यः

निवनया ॥ ६५ ॥ मयाकृतमदाषमरुः वागनसमरुडाः मयापदा

मयामरुडाः संपरिसयाथील ॥ ॥ दाषणमिगुभापामिः

निगुमिषपिउलुष ॥ सवृमासस्यपप्रसः नासारुवमिकर्कग ४ ६

६ ॥ निगुमिइलसां पानियाः शेषः दयुः युगंदयिडाः गथमरुः

मान

श्री

मालयसुखानयादल कायधधं॥ ॥ अमरं गिगिप्रवदि अमरं
कीवराजने॥ अमरं युभवती कार्या अमरं वा जराधिरं॥ ६० ॥ अ
मरं रुतं गिगिप्रकालममि अमरं धाय किलका अमरं धाय युवधः
नमस्ते अमरं रुतं वासकयाववन॥ ॥ इत्येताया रुनी पासी
इत्येतरुमुद्रमायुध॥ इत्येतरुमुद्रनायी इत्येतरुववनपिय॥ ६१ ॥

५२

इत्येतरुतं ययक ववन इत्येतरुतं रुमाउनस्वामि इत्येतरुतं विरुत्ता
कमस्ते इत्येतरुतं पियाववनकाकम॥ ॥ नदीनां जकवीर
त्येदः नायीमाश्रयमिवता॥ मनूष्यामां नयाह दमानां ययनिर्वमितु
॥ ६२ ॥ नदीसत्येदरुतं गंगा मिसाजनसत्येदरुतं पमिवताः
मनूष्यासत्येदरुतं वाजा दमगत्येदरुतं थमवसवपायु॥ ॥

वन

युष्मदेषु समाकीर्णः दागी दास समाकृतः ॥ स्याद्विप्रहितां वसां यथावस्थं
थागृहं ॥ १० ॥ कायकृयनसंशक इतसां वनस्वातिनः अकृदकसां

श्री

ः गमयाकृतसकलकयाविशसंवातिनः ॥ अकृयाकृतवनधायः ॥ ॥
सर्वेषां भवयत्नानां ॥ मिथ्यावत्तमनुरुमः ॥ तस्माद्रुदर्थनी सायां तया
काधननकिं ॥ ११ ॥ समस्तवत्तयातिनः ॥ अकृयत्तनः ॥ गीप्रिय

५३

तः धननः स्त्रीवत्तनगाठमानः धनयाकृयथाजनः ॥ ॥ कृष्णः
संतिवृत्तानि ॥ कृष्णदत्तककले ॥ कमलिहन्तकया ॥ याष्टवाधनरुः
नयनः ॥ १२ ॥ महिरुक्तीरुतडासः ॥ कृष्णभावरकयः ॥ कृष्णरुः
सदासकृतभावरकयः ॥ कमलीरुतडाअवाजाभावरकयः ॥ याष्टखनः
भावरकयः ॥ ॥ स्त्रीसांधावमहसागियुभास्त्रीगिमदीपनः ॥ यदा

वान

वायसकात्यकिः सवरापनिवासः॥ १३ ॥ स्त्रीयाथावशतंशतकिः

श्री

उगदहस्वताः चकधालसाः ॥ यामसानकसानयायः कायवायकः स्वा

मिडासंसर्गयाय॥ ॥ कवयश्चकिन्नपश्चकिः किन्नरकनिवाः ॥ १४

यसाः प्रमदाकिन्नकर्वकिः किन्नरकनिमयपा॥ १४ ॥ कविः

जननकमखदः काखनक वसुमनजः मिताजननकवर्मासयाकः

मरुवाजननकमहाक॥

॥ पृथयथाजनारार्याः पृथपिमुप

थाजनारार्याः पृथपिमुप ॥ १५ ॥ कला

नकायकः कायदयकः कायदयकः पिमुपयकः याकः मिथः

दयकः कायदयकः थअमदिमयायनः समस्तथअमयथाजन॥ ॥ १६

समअववमहमीः याकायाववमहमीः नयन्दाववमहमीः थवि

मान

जावय गात्रियः॥ १६ ॥ हृमिहंलंमद नउअः ॥ पर्वाननउअः

॥ दशयाजानउअः श्रीजननविपनउअः॥ ॥ नयदानिनवासानिः

शी

नयाकायाननक्रवाहा नवधोने ववधावाः स्वभीताचकलक्रियः॥ १

॥ हंसमयाअः पर्वाननउअयकानः नक्रायाकनयानः चिदानः

यानः श्रीजननक्रवाहायनजीअः थअभील स्वतावनः कलश्रीः

ऊँ

लं॥ ॥ नदीपातयनकलः नावीपातयनकलः॥ नावीनाश्चनदीतश्च

स्वच्छन्दसतिगागति॥ १७ ॥ स्वसिनः श्रीवनयाअः कठिनअयः

कीअः मिसाउननः थअकलकलनिकीअः थकनः स्वयां श्रीजनयाः

स्वच्छन्दगति॥ ॥ समापाः श्वस्तिनवक्रः रुद्रपाः श्वस्तिनन

पशापाश्वस्तिनयः श्वस्तिननसंगयः॥ १८ ॥ अस्ति

वान

श्री

यासमीपसमाहसिमाः सुखिनदिनिताः बाजानं नायशादभ्रदुजानिताः स्त्रीनं
नापकुशादभ्रपृषजानिताः धनिसंगयममात॥ ॥ नेवपभ्रमिजा
ताम्बः कामान्धनेपभ्रमिमदानाम्बः कार्थीक्षानपभ्रमि॥ ६० ॥ जन्म
इत्यंनस्यं श्रयासननक्तनं सखदः श्रुतिकामनपीठनपृषनं सखदः श्रु
तिश्रुदं वात्रिप्तनं सखदः श्रुतिद्वयदयकयादइअनेन सखदः ॥

ऊदः

॥ श्रीरुसन्नयसस्यतिः सार्याश्च गतयो वना॥ वगयत्या गतस्यः
अभ्रं वगदसागतं॥ ६१ ॥ अन्ननयइतसाजीर्णानकलीदः
सार्याइतसाः जीवनवितकासलीदः अयइतसाः संयामसअयसपाइ
अतिहाअअलीदः साक्ताइतसाक्क (धनकासलीदः॥ ॥ सङ्की
लकगहीनवः कलहीनस्यस्वति॥ अयाइवमगनायीः गियावर्ष

यान

मिसव ॥ ८२ ॥ **सकं मसइयाक वाद सव सति** कपाउ सअरु मः

की चर्वक सआगाक धरु निरु नन नानं रुय ॥ **यस्य सार्या वि**

गी

वृपाकी कससी कनरु पिय ॥ उरु शरु ववादी व साउ वान उ वाउ ॥

रा ॥ ८३ ॥ **यस्य मनषा यामी** विव पव चरिउ सदां कनरु याक

उमिउ न वन न्वा ययअ धम स्याथ मरु नसां स्याथ धम ॥ **यः**

५१

स्य सार्या सव पाव रुर्क व मन गमिनी पनितुं म व राधी व साधिया नधि ॥

या ॥ ८४ ॥ **यस्य याक नाम वपली रु** स्यामिरु की क्रिथं वा क व वनः

काक धम स्या मा सन रु नसां मडा धरु थं ॥ **यस्य सार्या गुरु नितुं**

अनी व पवि गऊ ति ॥ रु स्या सी दनि ग प्राप्ति पमिनी वरि सा गम ॥ ८५ ॥

गम स्या धरु मी न खि वान उठा थं न्वा ययअ धया क्रि क्रि क्रिया मवी न

बान

ॐ

सदस्वयं गच्छति कलान पलम्यान सखल गठ धं ॥ यस्याः
 र्या गृहनि सं मा केवदित काविनी ॥ वडन न मय गजानि शुक्र पक्रय था भः
 भी ॥ ६६ ॥ गच्छया कृत मीनि मृदित का श्री कृतं धम्या भवीव शु
 कप क्रया वलु माका उा धं जायि उा ॥ विजा मय वदति पृथं ॥
 क सं गा प काल क ॥ वय भ क कलाल मी र मय विथ मय कृतं ॥ ६७ ॥

五

कलसकायवायाअच्छायः (भक्तसत्तायविविधाअः कलधववपूषकइवः
 दाअः कलकायनंभावः (भक्तितथायसंकलयाविशामविअकः कलसं
 ॥ एकसाय्ययः पूषकइवदभः (धनवशः कन्याकालावसानपि
 नयास्यनिवविधिया ॥ ६६ ॥ कलानकल कायकलकलसद्वयः
 साजिमलिक्यान्नावः धनयाविधियाइयसकः ॥ ॥ एकव्याः

दान

श्री

वहवः पूजः गयामका यदि उक्तं ॥ यजुः कथा मधुनः नीलस्त्रा विषमस्तु ॥
७॥ ६० ॥ कनककायवयकायायुः ॥ कनकवदं जया अनमान ग
या अनसाः कनकमधया रुतः नीलधसा ताड ताड नलायु ॥ ७
कनकवृक्षेन दक्षमानन वकिना ॥ दक्षकनकनं सर्वक पूजक कलः
यथा ॥ ६० ॥ गदसिमा कमानवनसः सिनन असमस्तवनं दूतक

७०

सः श्रुतं पूजकनकायः कनकस्तनः समस्त कलमानकयिजा ॥
चकनापि सवृक्षः पूषि नन सगन्धिना ॥ वासितं कनकनं सर्वः स पूजकः
कलं यथा ॥ ६१ ॥ गदसिमा कमानयाः स्वानया सगन्धनः सकलः
वनं नस्त्राकः गन्धस्य पूजकायनः कनककायायथा ॥ ॥ यसा पूजाः
वभारुताः सार्या कंदान् गानिनी ॥ विरुध प्यपि संखुष्टः स्वर्गतस्य मः

वान

दीनस ॥ २ ॥ **श्वस्रया काय कलाकः** चरत्वा मिनि थअवसा सवाः
निअः इथपूथसपलिनः संकुवइअः **श्वस्रया यथीसंस्वर्धाय ॥**
अथकासपिठवर्धः सपिमायलुपाषकः ॥ नमिअं यइविश्वासः सात्ता ॥
र्यायसुनिर्वकि ॥ ३ ॥ **कायइसंअस्र** श्वस्रववयावसासयानः
श्वस्रनकायपासपिअः वववायंअस्र श्वस्रअविश्वासवायः अस्रमिणइः

आ

६०

सं श्वस्रथअभवसासमिअः कलाकइसंअस्र ॥ **यस्यजीवनिः**
जीवनिः विप्रमिणश्ववान्धवा ॥ सरुलेजीविकंस्यः आत्मार्यकानजीवनि
॥ ४ ॥ **श्वस्रमाइवादानः** थअ०००मिण थअथिथिन्वापिअः
थस्रथकान्वाकधायः आत्तामायनहिदासंमन्वाक ॥ **सजीवः**
किउवायस्य अस्रधर्मसजीवनि ॥ अस्रधर्मविदीनस्य निस्रलंसस्यजी

ज्ञानः

५

विमं॥ ७५ ॥ म्वाकधा यरुतं॥ उरभलमः धर्मभलमः उरंमभल
धर्ममभल धर्मन्वादायानिरुल॥ ॥ वाचासप्रस्वकीयसाहाः
यात्रपवमीसमी॥ लक्ष्मीयागवमीयस्यः सरुलंनसाजीविमं॥ ७६॥
यक्षयासुदुमः सप्रस्वमिवसलपः कलामसन्दवीसमीः लक्ष्मीरुलसांः
दानयायसमर्थः धर्मन्वादायामारुलधाय॥ ॥ धर्माधकासः

६१

भाद्रपद यस्याकाशिनविश्वरू॥ अजायन् नर ४ सायिनि यथं कस्य जीविनः
॥ १० ॥ धर्ममधलः सूर्यमथानः भाद्रमधलः धनमनषात्वादा
यानिसुतः ॥ धर्मकर्मविहीनस्य दिनं याति च विविचि यं ॥ सत्ता
साकालवर्गैव स्वयं चैव प्रजीर्यते ॥ ११ ॥ आश्रयाधर्मयुतः कर्ममया संदी
नानिवा समनसया स हि धीरुः ॥ धनं कपि या असक जीर्णं दूषात् ॥ दीर्घं दूषि

ॐ ॥ भगवन्विता वाचा वाचा वाचा वाचा युनीवधि ॥ युक्ताय कंठु वाचाय नः
वशाय वृत्तौ वशा ॥ १०० ॥ गच्छतु सांयुक्तमस्तु सदा सदा यथा गच्छतु वशा
उपवास्तु सांयुक्तमस्तु सदा सदा यथा गच्छतु वशा ॥ ॥
गच्छतु सांयुक्तमस्तु सदा सदा यथा गच्छतु वशा ॥ ॥
गच्छतु सांयुक्तमस्तु सदा सदा यथा गच्छतु वशा ॥ ॥

ॐ

42

कासमयिपुनस्तमि कासमिहवसंग्रह ॥ कार्यकासमनापिहः कासवधमि
पञ्चिमथा १ ॥ कासममवहमिश्रमिहः निदमवियरुहमिहः कासन
मः श्वरुन पञ्चिमयानिमन कार्यकासमसइविहसकाहकासनखन ॥
कासः पंचमिहमनि कासः संदरुहयजः ॥ रेकोः सफकूजागर्हिः काः
नादिइनिहकम ॥ २ ॥ कासमसमकपाठः अनिहः कासन जजसम

यान

श्री

संसायययिअं कालन हृदयक यानसां कालजागर्तुः श्वरनकालन
अधरु ॥ ॥ कालात्यसाहमंवीजं रुतं कालात्यर्षक ॥ कालः पवर्तु
कसृष्टि पनः कालादिसंदन ॥ ३ ॥ पसापियं कालयाकनः भः
सयिअं कालयाकनः सृष्टिउत्पत्तिरुसं कालसः संसाययामं कालन ॥
दिओरुमिश्रया पश्चः वलुर्कनिलमात्रमशः सर्वसंदनक कालः नसात्वा

६३

सामरुतुय ॥ ४ ॥ आकाशः दग्धदिगः पृथ्वीः लंखः वलुः सूर्यः वायुः श्व
सनसं कालनरुतुयसपिअः श्वरनसयासिनं कालवलुअक ॥ ॥ किंकपि
पतिवकाशः आगायकनवध्वक ॥ नयकृपनकायमः वज्रकः किंकपिष
मि ॥ ५ ॥ क्रायश्चक्रसंयानकृपयाजनः रुद्रकृपनमथलदाशः दयाः
कगः (थ) धानसाः भाविलः संन्यासियादगमः (धा) वियाधादानकृपयाज

धान

न॥ ॥ प्रत्यक्षिन्नमर्यादाहवन्तिकिसमागता॥ सागवाहदमिह
नि प्रत्यक्षिन्नसाधवः॥ ५ ॥ प्रत्यक्षान्तम सागवसमूहः॥ थः
अमर्जादमासु सागवतं रुदं क्वायाक साधुजनन प्रत्यक्षकादसः
अमर्जादमासु सागवतं॥ ॥ कदनीवनमकाः वन्किमान्दपयक
महाभूविदकजनस्तान युगवांकिं यथाजन॥ १ ॥ कनीनवनः

श्री

सवितायान् अग्निर्वायवामरुद्राश्च धाम्भूविदकजनयादुःखान् यु
मिकयायुगनः कृपयाजन॥ ॥ सव्यश्चरितिकलाक सार्थादासागः
प्रस्यवा प्रतिपन्नमहासत्त्वा नवलनिकदावन॥ ६ ॥ कस्यांगवस
सुभयपर्वतं वसतप सागवनं मर्जादववसपः महापृषनश्काग्वव
संथडा मर्जान् महासु॥ ॥ विद्यरुम्हीपृषपला विशरुवाद्म

शान

थी

(सकपशपावृष्टतिथकवीरः दयासाधुविरक्तः ॥ ९ ॥ भिमाजनः
याकः वपनदयिअः आसः ॥ आकनपदयिअः नीचयाकमुमानदयिअः
साधयाकदयादयिअः ॥ ॥ साधुसत्मानमाधुगः रुवन्निददः
विक्रमः ॥ उपकावशकनापिः साधयाकदयापिः ॥ १० ॥ साधुजनमा
न्यरुक्कयाशनः थअरुक्कयापिः सनिअः रुक्कनसः रुक्कयाशनः दिनाउप

६७

कावयादः थअरुक्कयापिः सखः ॥ ॥ वधवाधुनिभास्तानि नावृष्टः
भक्तवाधयः ॥ प्रत्यकं वृक्तदीपः वृक्तदीपानपभक्तिः ॥ ११ ॥ भः
मुक्तनः रुक्कनसः रुक्कयापिः सनिअः रुक्कनसः रुक्कयापिः सनिअः
गथदृष्टः ॥ प्रत्यकं वृक्तदीपः वृक्तदीपानपभक्तिः ॥ ॥ नाविकलसमा
कायाः रुक्कनसः रुक्कयापिः सनिअः रुक्कनसः रुक्कयापिः सनिअः ॥ १२ ॥

शान

यी

उविच्छिनः सर्जनपनिस्वयं नः नेकान्धं पीडनस्वयं कृत्वा इति न काम
नर्जनपतिरुतः वयसि सिधं पिडनसुन्दर इति न काम ॥ चः
ननं गीतं वलुः वन्दनं वलुमाथा वलु वन्दनं गीतं साधुसंपर्कं गी
तं ॥ १३ ॥ श्रीवलुं गीतं वलुमां गीतं धनं नायसिनं श्रीतं
रुतः साधुसंपर्कं याय ॥ ॥ अधर्माधनमिच्छति पीतिमिच्छ

६६

निमधसा ॥ उरुमासानमिच्छति मानादिसदमाधनं ॥ १४ ॥ अधर्मा
धनधनं ॥ कायायिअः मधममन पीतिरुः कायायिअः उरुममनमाः
न ॥ कायायिअः धननरुअधरुकायाधनरुतमान् ॥ ॥ मन्त्रिः
कावरेमिच्छति धनमिच्छति पाथिव ॥ नीचाकसरुमिच्छति गीतिमिच्छं
मिच्छधव ॥ १५ ॥ अधिननः द्यातुं कायायिअः याजानधनः

वान

ॐ कायायिडा ॥ नीचमनकलद ॐ कायायिडा साधनभानि ॐ काया
यिडा ॥ ॥ ॐ जवावाथमिच्छन्ति वपमिच्छन्ति दानिका ॥ हातय

था

४ कलमिच्छन्ति तापसा ॥ १६ ॥ ॐ कवलाकनधन ॐ काया ॥ ६१
यिडा ॥ मिताजनन ॥ प ॐ कायायिडा ॥ थ ॥ पिचिन कलसयिच्छयायि
डा ॥ कपस्तीपनिभन ॥ स्वर्ग ॐ कायायिडा ॥ ॥ कृमिकृमनय

दवा ॥ कृमिसारुगयत्तखं ॥ पयपीजवयावलि ॥ नेवसाधविविधं ४ः
॥ १६ ॥ ॥ कृमिइ ॥ खमयाडाडवायक ॥ कृमिसारुनसखसि
य ॥ भवपीजवियवलि ॥ धनतासाधनसावगकृच्छिडनमास ॥ ॥
कृमिकानासकृत्याह ॥ कृकार्यनेवकायं ७ ॥ स्वसाकार्यनकृयात्रि ॥ नि
हन्तेनेवभवय ७ ॥ १८ ॥ ॥ हनीमन ॥ मरुयाकाका संरुमयाक

वात

मृकार्ययायिअंसव विरुधरुमायायिअमखः रुतमद्रुमायायिअ
मव ॥ गेसगेसनमानिकं मोकि कानगजगज ॥ साधवानदि
सर्वे वननन्नवनवन ॥ १० ॥ पर्वरूपमिमानिकमदा किमिपति
गजमहीमरः साधजनसकवनंमर वनपतिंशीखुमर ॥ ॥
पत्रकार्ययूकान्ताः स्वकार्यक्रियसाधय ॥ सहकार्यपुनिर्वृतिः

६८

राजकार्यपविकम ॥ २० ॥ भवयाकार्यमयुक्तियाकम थडाका
र्यसुदुर्गतनसाधनयः मिश्रयाकार्यसनिश्चययाकम राजकार्यसवसनः
याय धृतिहानिनयायमान ॥ ॥ जतसखवनीयानाः यत्कृतननद
भर ॥ मृचनवापि साधनां गिलासखवनिष्ठति ॥ २१ ॥ नीचनयादाः
कार्य संखनवाजायाथं ननानंमनिडा साधनयादाकार्य साहासवाया

वानः

धः प्रायसरु॥

॥ महता मापदशक्तिः महता भवसंपदशक्तिः ॥

पुननवापः नापदोनेवसंपदशक्तिः ॥ २२ ॥

थी

६ संपत्तिरुपधः विवामनवापः विपत्तिमदसंपत्तिमद॥ ॥

गमुमुयानि श्रुतः वमु (गपमवतुमा विषुसमवमसाधममदमकः

वसपुष्टि॥ २३ ॥ दवसंयुष्टयायः श्रुयपातनः वतुमासंयुष्टयायः

६०

वमु (गपम विषुसंतापयायसुमनपाअः रुडापुवसंतापयाः हाजात
पाअ॥

॥ सखकशपा० क (श्रेअः ययाना गमुविनकाभा सर्ववागः

नितामठाः क्रियाअनपत्तिना॥ २४ ॥ वाकसं पठपुसं गमुस

अपनिः धसमसंवागनिदासं क्रियाकर्मयाकसः क्रियाअनपत्तिरुध

य॥ ॥ वीरुममश्ववानिः वाजसवानपावने॥ धीवाश्वत्वाविकुर्वः

वानः

श्री

निःकारवाः कृषिवादकाः ॥ २५ ॥ वादकवनिजानः भसवनिजानः
वाजसवाः नपावनः धर्माधीयस्तानि पतिभनयायिः कारुवस्तनशक्तः
मक्राययिः ॥ ॥ एजधनार्थवानिभविशायीववदृष्टं ॥ मनुका
समपत्न्याः मानाथानपतिवृजः ॥ २६ ॥ धनदयकस्तपूस्तनः
वनजव्यापाययायविशदयकस्तपूस्तनगभास्तुदनिः पृथाः

१०

थीनः मनुकास्तसगमनयायः मानदयकस्तपूस्तनः वाजसवाययिः
॥ ॥ मुखपधनुयाकारः वावाचन्दनभीकलः ॥ हृदयकर्तृसंयुक्तः प्रिविः
धंधूर्कस्तक्रसं ॥ २७ ॥ रत्नासपलस्वानथः वलुमाथययापः ववनथीखः
सुधंभीकलः हृदयकयतिथः धस्वमाधूर्क्यास्तक्रसमयः ॥ ॥ इर्जः
नष्टियवादी चनेवविष्वासकायगं ॥ नधयवमिजिकात्यः इदिहाताहसं

यान

शी

विषं॥ २४ ॥ इर्जनमन (थडुखकायिअः विश्वासमयायिअः अनकः
सिहाउासमानं खरुकेकायिअः गगनसादृश्यसं॥ ॥ खलः
सर्वपसायाति पयच्छिआसिपयभक्ति॥ आत्मनोविल्वमायाति पयन्नपिनप
भक्ति॥ २५ ॥ इर्जननः भवयाच्छिदः ०० नकासमानरुनसांतडाधदखदः
थडाइलकासं वास पयधनसां मखदक्यामूडा॥ ॥ दभनीयाः

०१

अथमूर्खाधनअनश्चिनिर्गुण॥ इयस्मापिचदभक्तः किंशुका ०० वपूषिकाः
॥ ३० ॥ (गायमूर्खडा रुदयानः डाकधनियनिनिर्गुसिइतः तापातकस्य
यः साहासिवहासायादथा॥ ॥ मूर्खापिपत्रिदरुवाः पुनरुद्विपदः
पयु० लिशकवाक्यमभानः मृदुदक ० कायथा॥ ३१ ॥ मूर्खजातिशुभाः
मृवभनाउकमासः यत्पुनः नीपुतिमपयुः ववनहातकासः पृथनकः

वान

थी

याअः वार्थविधियिअ॥ ॥ सर्पकः वरुखवः कुः २४ सर्पकः व
कः २४ खवः॥ मलीषधिवमः ४ सर्पः ४ खनः ४ कः नापभा मयक॥ ३२ ॥
सर्पः अकः कः नं अकः सर्पयामिनः इर्जनः अमिजलः कनधातसाः स
नुअषधियावमयमः गर्पः इर्जनः कनः उपमामयायमजीअ॥ ॥
हलीहलसममः गनहलनवाजिनः॥ गंगिनादगहलनः दभत्यागन

१२

इर्जनः॥ ३३ ॥ किमिअदानद्विकृपाकवानमानः मठअभक्तिकृपाः
वकवानमानः ६ दअअइलदअः विकृपाचकमानः इर्जनः इलदअः
दभत्यागयादउउवालदक॥ ॥ हलिनाकगहलनः कदिहलन
वाजिनः॥ गंगीतयुग्मलनः खमहलनः इर्जनः॥ ३४ ॥ किमिअ
मृकगजादवाहः मलअमानकजादवानः ६ दअअउवेनेतानजादवाः

वान

अ

न इऊनअः खज्जआदधान ॥ इऊनअपविहर्कवां आमुताः
संकमायदि ॥ मणिआसंककसर्षः किमसोवहयंकव ॥ ३५ ॥ इऊ
नइऊकमाउकमागः आमुसलसनं माउकमातः मणिनरुखसपधानसः
नं सर्षाविश्राममाउकमा धधं इऊनखसडा हानीमाउकमातधकं
॥ पायापायविगधमः धनपन्नगयायथा ॥ रुसन्तिथवनः

॥ ३

श्रीयः श्रीयान्निधिवकविष ॥ ३६ ॥ पायश्रपायविगधमः इइहायइसा
अविअधं घासनकानइइवितः विग्राम इइमानकानवसवित ॥
इइअऊमिहिसन्ना नापषाककदावन कासइऊनमायातिरुगल्ल व
क्रिवीजवम् ॥ ३७ ॥ विविधधकगल्लानपाअ जाखाखयमकअ
खयतसं वलकानसः इऊनअसडाअ गदघासधं मिनधियअं नयव

वान

श्री

नवासंभानलरुडा॥ ॥ षष्ठीककत्रकदाषामृगीतिमधुपिंगलः ॥
 नकानवधाउव ककुस्थानंनविशरु॥ ३४ ॥ षयता ६० यानयादाषः
 गः ययता ६० मियमिखायाक गतकिता १०० खठयाक धसियाकउः
 लिथिसिभ्रममड॥ ॥ स्तानकठइलावाय भेयस्त्रहं यविभ्रजः
 ७॥ विश्वससमथकार्य विनागमपगचुकि॥ ३५ ॥ स्तानसवांग

१४

कपतिः इसावाविभ्रमिभ्र याननलरुडमानु स्तानधामसा विभ्रमयाक
 कास्यः कार्यनागरुय॥ ॥ मडनेवमडरुकि मडनादकिदायगाश
 नसाधमडरुकिवि रुसा रीकू कधीमड॥ ४० ॥ नायनकाठुभाः
 यकयिडा नायुडानकाकंभायकयिडा नायुडानसाधनधमजीडा कनाम
 इधमननायिडा ककयासिनंकाकधाय॥ ॥ वनपदलिगावकि

वान

(शी)

दहन्मन्त्रातिवक्रुति॥ममननननयमिःश्रीपाधामुद्रांरुतः॥ ४१ ॥
 वासुनस्यदयोमीननयउःमंरुवइस्यंउनिअःदाइवसुद लेखवानडासः
 दडाःदानापेनावकिअःनायिअमीकलन॥ ॥सुतयासावसीव
 ईकन्याववहृगधिमी॥उपेयमिचक्रुगमिःइवक४॥पविचक्रुय७॥
 ॥ ४२ ॥सुपुलाकमिसाखवातंन्याःग्राययउःसुमिःधर्मयाः

गज

ननमाउकमान॥ ॥यदराकदधिसनाःपयदाषानकीरुना॥कलदः
 यरुमिंशेवःइवक४पविचक्रुय७॥ ४३ ॥सुपुलःपिअमहाकः
 नयअःमवयादाषमहासइउःग्राययउःकाठइउःधर्मतायासममाउक
 मान॥ ॥श्रुयानंममासाःमावयेवउतमिका४॥मथाग्नक
 ४पुनावासीःइवक४पविचक्रुय७॥ ४४ ॥सुगगयःकिमिमहइउः

शान

श्री

नकवअसाः मिथकाथामिसाः भगनापाननगाठनसात॥ ॥ इऊनं
यसदामिडः पत्रस्वामिपत्रलिये॥ (गजीर्नवमुजीर्नचः इवत॥ पत्रिवऊ
य॥ ४५ ॥ इऊनवलिमिडः पत्रपत्रपयाकः यससमिसाः जीर्नः
अदवमुः जिथिसाः भगनापाननगाठनसात॥ ॥ नविश्वमदमि
डस्यः मिथस्यापिनविश्वस॥ कदावित्कपिनामिडः सर्वयस्यकाभय

१६

॥ ४६ ॥ वेविअंविश्वसमगताः मिडअंविश्वसमगताः॥ कदाविः
लिपनसवातकाः समसुयफदस्यकाभयायिडा॥ ॥ नविश्वः
सदविश्वसः विश्वसनेवविश्वसत॥ विश्वसारुयसत्यनः सनानेवनिद
कमि॥ ४७ ॥ अविश्वसराः सकिनः विश्वसमगताः विश्वससंविः
श्वसयायमगताः विश्वसयाकनः रुयदयिडाः सनानेवनिद॥ ४८

चान

॥ नदीनां वनखीनां वंशीनां गमुपागिनां विश्वासनेव कर्तव्य
शुभवाजकसपुत्रा ॥ ४८ ॥ नदीनां सुविताहाकसपुत्राः कुरुताः
गमुपादुताः मिमाजुताः याजाताः धर्मिता विश्वासनेव कर्तव्य ॥
नदीमीत्रपुत्रवक्राः यावकत्यानिमययाः सामन्तप्रदितायाः नरुव
निविशयुषः ॥ ४९ ॥ पुमिसा यमिसाः आहवमधनमिसाः

श्री

॥

मजीमइयाजाः धर्मताम्यायमरु ॥ ॥ यदीकुत्ता श्वमं पीति जीमि
रुतनकायय ॥ इतमर्थयया गच्छः यवाश्रदावदभ्रम ॥ ५० ॥ श्री
निताडयाकयअमनः धर्मियायमरुताः कुरुक्षालसाः इलखायः धनः
व्यादलः ययमिदिदभनयायः धर्मस्वतामरुता ॥ ॥ नगकुदुद
विश्वासः नकुर्याकुरुवियरु ॥ आत्मनापितथाकाधः मिद्वेयं नकाय

यान

श्री

यज्ज ॥ ५१ ॥ इष्टयाविश्वामसमं नमस्कृत्य ॥ कृतं नमस्कृत्य नमस्कृत्य नमस्कृत्य
थमस्माद्विष्टयं नमस्कृत्य ॥ मिष्टयं विष्टयं नमस्कृत्य ॥ ॥ कृतं यामलियाः
जानं विष्टयं वष्टयं वष्टयं वष्टयं नमस्कृत्य नमस्कृत्य नमस्कृत्य ॥ ५२ ॥
कृतं नमस्कृत्य नमस्कृत्य नमस्कृत्य ॥ अलिनि यामलियाः नमस्कृत्य नमस्कृत्य नमस्कृत्य
संन्यासी ॥ इति नमस्कृत्य नमस्कृत्य नमस्कृत्य ॥ ॥ कृतं नमस्कृत्य नमस्कृत्य नमस्कृत्य

॥ ५४

कृतं यामलियाः नमस्कृत्य ॥ कृतं यामलियाः नमस्कृत्य ॥ कृतं यामलियाः नमस्कृत्य ॥ ५३ ॥
कृतं यामलियाः नमस्कृत्य ॥ कृतं यामलियाः नमस्कृत्य ॥ कृतं यामलियाः नमस्कृत्य ॥
दशमं यामलियाः नमस्कृत्य ॥ ॥ नमस्कृत्य नमस्कृत्य नमस्कृत्य ॥
यपः सप्तमं यामलियाः नमस्कृत्य ॥ ५४ ॥ ॥ यामलियाः नमस्कृत्य ॥ गृदि
निकलान् दयकं नमस्कृत्य ॥ यामलियाः नमस्कृत्य ॥ नमस्कृत्य ॥ यामलियाः नमस्कृत्य ॥

शानः

मद्रः रुआनयाकस्वतांमद्रः ॥ ॥ द्रोविषोविषमग्निश्चः दंपताउव
मिष्याया॥ अन्तर्नैवगन्तव्यः द्रवसावृषरुमयः ॥ ५५ ॥ वाक्कगनम
याश्रमत्र अग्निआश्रमत्र नमः सुपूषयाश्रमत्र नः पुत्रमिष्याया
श्रमत्र नः धर्मसुदधूनतममरुता ॥ ॥ साकयाजहयंसर्जक
क्रिष्णगभासतापशयनविद्यकः नकृष्यारुउसंगति ॥ ५६ ॥

[illegible]

दान

श्री

दयगमलाघः अग्निः (गवनागया) (गव) धनया (गव) नवाधनयय ॥
उर्ध्वगः कप्रदकः युक्तमयं पयस्त्रि यशानिदोमेथूनमालसाः भवन्ति विवर्धनं
॥ ५७ ॥ दत्तामकवाउवासः रुतः धः पयस्त्री दत्तमेथूनः श्रुतासः
धनयाः सवतपयः वाधनपयः ॥ पयसां पयस्तश्चः पयिवादः
पयस्यवः ॥ पयिदासं सुवृत्तनः यत्नतः पयिवर्द्धय ॥ ५८ ॥

८०

पयस्त्रीः पयधनः भवया खपिक युयुयास्मानसहासाः धनउत्तनमाउकः
माला ॥ पयश्चकार्यदंतायः प्रत्यक्षः पयिवादिनः ॥ वर्द्धयत्ताहः
शंमिदुः विषकुरु पयाम्खः ॥ ५९ ॥ खलिअनः कार्यसनकः खदुअन
धमनः (धुखलाकः) धिंमिदुत्तकमालः असथकायनसः दअनइइ
नमाकप्याकयाधः ॥ कदमश्चकृत्किं वः कलायाकितदीनः

था॥ कृद्वयं वक्रा संव॥ वर्जयन्त्युत्तमं सदा॥ ६२ ॥ **महिम्नं दधामः क**
वलिं धामा॥ कृद्वयं वक्रा संव॥ महिम्नं दधामः क महिम्नं दधामः क
 नाउत्तमं सदा॥ ॥ उर्वभा यदि वृषाः वरा यदि तिला रुमा॥ (गाथाः
 सीमनका चैव वर्जनीया पत्रलिपयः॥ ६३ ॥ **उर्वभा ना सत्तमं यः क**
 पयाः वरा अपयाः तिला रुमा अपयाः (गाथानी अपयाः मनका अपयाः

८१

धमिथिं वृषा नसां पत्रलिपयः त्वत्तमं सदा॥ ॥ यथाकार्यं पत्र
 विषयः सत्तमं विषयः सत्तमं विषयः सत्तमं विषयः सत्तमं विषयः सत्तमं विषयः
 ॥ ६४ ॥ (गाथा नकार्यं सत्तमं विषयः सत्तमं विषयः सत्तमं विषयः सत्तमं विषयः
 सदा नः धमि विषयः सत्तमं विषयः सत्तमं विषयः सत्तमं विषयः सत्तमं विषयः
 कार्यं वृत्तं सदा कार्यं वृत्तं सदा कार्यं वृत्तं सदा कार्यं वृत्तं सदा कार्यं वृत्तं सदा

रुक्मानः श्रुकार्यका समानः सदा कार्यसं ददः स्तनीन भविष्यथायसः
 ग्यायमानः ॥ रुक्मानकलीनानाः राजापयापजीविनाः रुक्मानः
 स्तनभक्तः कृत्वा पूर्वापकाविनाः ॥ ६६ ॥ श्रुत्वाः भवयाजीवः
 रुक्मानकः धिग्विस्तः राजा अहायमानः पूर्वसमृपकावदेयोक्तयाः स्तनी
 भक्तः अहायमानः ॥ पादपानां रुयं वारुः पद्यानां भिगिवा रुयः

६७

पर्वमानां रुयं वारुः अन्तनां द्विपक्षरुयः ॥ ६७ ॥ शिमाया या रुयवायः पः
 यस्यानया रुभिगिवा कालपर्वरुयारुयमसकः अन्तया रुयमनृषः ॥
 मातायदिविपंदयातः पिता विक्रीयरुसकः ॥ राजा कया विवातायः कामया
 ता रुविष्मि ॥ ६८ ॥ कदाचित् रुमानः असवित्तादासः ववूनकायः
 सित्तादासः राजान श्रुयया रुतादासः भवत सतखसुपुसुदः ॥ ६९ ॥

वान

श्री

यउवाजास्ययंवीरः समन्तीसुप्रादिमः॥ तजहं किंकविष्णामिः यतावशा
नकारयं॥ ६९ ॥ ययुयीदममः प्राजाधमः (यमंखममिः) ययुयीदममः
सदास्यः मन्तीखरुसदास्यः भवयसजनकयायः जननसखसययुइतेः
मृतमंरुय॥ ॥ विधायातिखिताउस्यः ससाहकवमालिका॥ द
वापिनहिगफाकिसंतिखितिखिमः पुनः॥ १० ॥ विधायासनकपा

६३

नसयासंरुयाः आखतदवनं तिथामसः सुयवायमः॥ ॥ कर्म
(साहि) यवननः वृद्धीनां किंयथाजनः॥ पाषातस्य कमावधिः सनदवारु
विष्णमि॥ ११ ॥ कर्मथकायधानः वृद्धिधसागकायः सनिशयानकः
यथाजनः साहानकवृद्धियामगः (थदवरुः) ॥ कर्मनापिपधानानिः
सन्निकषुयुयह॥ वगिषुदरुतः (नपिजानकीइः) खासागिनी॥

दान

५१

॥ १२ ॥ कर्मरुग्णयमासः किं गावलसमुत्तुयहसयादाकार्यः इतसां
रागमदयाः लायमदयामरुयिअग(थेधानसाः वगिळअचिधीदनः
वियासग्नसविवासायास्यनांभाताइखलागीइत ॥ ॥ सानूकस
रुधरुसिंः दाषाप्रियमसंदति ॥ यु(सापिदाषतांयाति वकीरुतविधाः
रुवि ॥ ॥ १३ ॥ विधाताअनकनरुतदासांः दाषयासंयुगइयाअन वि

५२

धामाविमखरुतदासाः युगयालंदाषरुत ॥ ॥ किं कनामिनप्र४याइ४थ
रुसाग४स्वकर्माहि४याथनेवहिमूर्खानां वृद्धि४कर्मानसाविनी ॥ ॥ १४ ॥
मनषाहानिइयाअकाशः थअकर्मानकाया(थमअमगाकः मूर्खयांजीवल
यदअः वृद्धिरुयुकर्मायाश्रुसावन ॥ ॥ रुतस्यरुषगंदानः सत्यक४
स्यरुषगं ॥ थरुतवहृषगंकर्तुः रुष(गे४किंपयाजनं ॥ ॥ १५ ॥ साहाः

वीन

श्री

नयागिसाकलं दानः कं० यागिसाकलं दानः कं० यागिसाकलं दानः धर्मकथाद
नः श्रुतवतभवतागिसाकलं दानः कं० यागिसाकलं दानः ॥ वविष्टहृषगमुत्तीतां ॥ ३॥
मागं पृषपहृषगं ॥ स्वदेहिहृषगं पृषगं ॥ पगीतां हृषगं दद्यात् ॥ १६ ॥ ८५
सिमायागिसाकलं दानः स्वदेहि सिमायागिसाकलं दानः पृषपास्वतदुतं
थडाकलवर्षासदानः स्वागिसागिसाकलं दानः ॥ नक्रयहृष

गंवदुःनाग्रीगां हृषगं पतिः ॥ पृथिवीहृषगं वाजाः गीतसर्वहृषगं ॥ ११ ॥
नक्रययागलंकालवदुमाः स्त्रीयागलंकालस्वामिः पृथ्वीयागलंकालवाजाः
कल्लोकयागलंकालदुतं गीतस्वाहा ॥ ॥ सहतायविरुवेथं ननीः
वान्मानउरुतं ॥ कंसाविषादघातनः कालीयस्यवहृषगं ॥ १८ ॥ ॥ अथदक्र
याकनः श्रुपमानदुतसां हिदलावधमातः नीवदुलदाअमानां सलीकः गथध

वान

समा श्रीकृष्णननुमिनक साअनयानः कातिनागया (आ) सा मा नरुअथां ४ः

॥ **॥** अविहमिगता कायं शुविर्नीयीपमिवता ॥ अविहक्रमाकरी

श्री

वाजाः संभाषावाक्यमथविः ॥ १९ ॥ **॥** हिसिमादलखरुतकाडा

अविः पमिवताकृतकाः मिसाजनशुविः क्रमाअनवाजाशुविः संभाषी

म वाक्यनशुविः ॥ **॥** अविहमिगतं कायं जजसपानविद्यकं ल

८६

पल्लनः पविताकः मन्त्रकानशुविः अविः ॥ २० ॥ **॥** वरधनामदलखरुतकाडा

अविः वरधनामदलखरुतकाडाः मन्त्रकानशुविः ॥ **॥** क

मन्त्रकानशुविः कांशः मासमन्त्रनशुविः ॥ वजसांशुविः कनायीः नदीवजः

नशुविः ॥ ८१ ॥ **॥** कंशुविः कयः नलिनवयानः मिसाकाननः लकः

सावकानः मिसाकाननशुविः कयः वगननदिशुविः कयः ॥ **॥** पिशुवत४८

नी

वानः

वदयाः सा उदयात्ममानसः (गोपुष्पात्ममानसदयाः त्वयभवकषिवज्ज०॥

श्री

६२ ॥ वव्याकनश्लेष्पविविधः सामयाकनथअमनसादकाः सा
कथअअसमानवियः थमथमनकषिवकर्मयाकअन॥ ॥ कपिः ६०

साक्रीयपासन वाक्मशीगमननच॥ वदाकवविवायगः स गृहानयकव
ज०॥ ६३ ॥ कपिनसायाइइमादन वाक्मशीगमनयादन वदाकववि

वाययादानः धम्मश्रुदनयकअनिअ॥ ॥ श्रुदीहसुनयाउक माः

समकंनियनया जीवमानारुवकुडाः सकृदश्वानश्रुजायन॥ ६४ ॥

अतिनियानादासनः सक्तिताक्रियेननदअ धवाक्मगम्याम्वसुडइसंः

सितदासंखियाइय॥ ॥ सुनदीनाउयानावी दुरहीनतुकाउन

वसुहीनमसकायं विद्याहीनादिआरुम॥ ६५ ॥ इहमइमिसाः

बानः

अ

धनमदयकनयालाउन वसुधा न सति सा विद्या मे मे अ वा क्रम धर्म
उत्पारव ॥ ॥ गारुत गिति स पद्रः ॥ गारुत द्वि पद्र द्वि उ ॥ गारु

नम पसायुका वसं गृह्य ॥ गारुत ॥ ६५ ॥ लंख स वा ल प ल खानः
॥ गारुत ॥ वा क्रम पन सं युका इल दा अ सा रा इलः गृह्य या घाल
न ॥ गारुत ॥ ॥ यद्वा त्वं व विषा मं मूर्त्वा नां कल द त्वं

६६

॥ पृष्ठा त्वं नायी मं गवानां वरु ॥ गारुत ॥ ६७ ॥ वा क्रम या उ
त्पाद यद्वा यः गृह्य या उत्पाद कल द नायी या उत्पाद म्वा मि सा या उत्पाद
न क वलि जा अ घा म ॥ ॥ मृत्ति हारु लं वदं गील वरु लं य मं ॥ वः
मि पृष्ठ रु लाना वी द रु उ क रु लं धनं ॥ ६८ ॥ वद म या या रु लः मृत्तिः
हा य या यः गारुत हा या रु लः गील त्रि न कः मृत्ति ग या रु ल का य द य कः

१३०

धनदयायादुतः दानयाय ॥ ॥ अग्निर्दहति तापनः सूर्यादहतिः

वज्रिनिः ४ वाजादहतिदलुनः कथमावाक्क (सदह ॥ ६७ ॥ अग्निन

श्री

तापनदहपयः सूर्यनकिप्रननः दहलपिअः वाजानदधुनदहलपीअः

वाक्कगनः कथनदहलपिअः ॥ ॥ मनसाकं नृकं मांसं वायवः

मथिनंदधि४ ॥ नृकं न्यादं नृधर्षः ॥ ७० ॥ ॥ सः

नसाकः सिकताः साहाननदिनाधविः वाजानडावयः धरु (गोमांसकुल्यः

॥ ॥ नरुन्यान्नमनमकिदयाः दन्तमाननदधुनः ॥ ७१ ॥ अयं ४ भंका पवि

त्यअः रुकमांसयुधिष्ठिरः ॥ ७२ ॥ ॥ थमस्यायमकः ॥ थमकालपा

अस्याककमकः ॥ स्याककमकः ॥ स्याकस्वयमकः ॥ थयताकालतावः यान

यानंदावमडधकः यधिष्ठिरवाजाहदा ॥ ॥ नमांसरुकसंदाधः

यान

श्री

नमयं नमो मेधुनं च वृत्तिवत्तुमानां निवृत्तिमुत्तराहृतं ॥ ७१ ॥ ज्ञान
यानं दशममदः मशयानता दानं दशममदः कामसवनयान दशममदः यासिया
वावसात्र धनं गात्रकुरुतामहाकुरुत ॥ ॥ वृत्तुसागवपर्यन्ता ॥ ७०
यान्ति धिगीमिसा ॥ नखादचापि यामासः कुल्यममद्विद्वत् ॥ ७३ ॥ पि
अममद नउता वृत्ती ॥ (गात्रनदानवित्त धनिरुत्तराहृतं ज्ञानायाधकः ॥

ज्ञानिनकासकया ॥ ॥ अग्निवापस्त्रिधामर्खाः सर्पवाजकला
निवृत्तिनित्यमवापययमः सद्यः पागदवागिषह ॥ ७४ ॥ मिः संख
ऋः सूर्यः सूर्यः वाजकुरुतः धनक्रिथं उचयययादुतः नत्कोलनं पागमाः
वृत्तुरुता धनमान ॥ ॥ अमममममिधायकाः वानार्ककुरुतः (गादः
विह ॥ पलाकमेधुनं निडाः सद्यः पागदवागिषह ॥ ७५ ॥ संख निह

वान

शु

ना जिथिक सा न सथया सूर्य मूखा न इइ सथमेथन सथदुठ धखुता
न नल्लमनं पारामावक रुडा ॥ सयमांसयतं सय वानकीकी
प्रकाजन ॥ उषादकन वृष्ण्याः सयः पारकवा निषट् ॥ ६६ ॥ नकः
स्यादोना नककयाधन वाना मूकी इइउ जानय समनं खनमा उइयः
सिमाया गा जनक यक वान धपूतान नल्लमनं पारक वइडा ॥ ॥

६१

मूनादयुगं ययः पृष्टादयुगं पयः पयः स्यादयुगं मांसः सासादः
ययुगं ययः ॥ ६७ ॥ मूनायाया रुयुगमादः मादयाया दयुगमइइ
इइयाया दयुगमा यायाया दयुगमधन ॥ पंचक्रियविनः
भक्तिः सुधीरु प्रथयानव ॥ मूनिमानि च कामीयः युव दधीन (येवचा ४ः
॥ ६८ ॥ धदामाननानं रुयः (थथाः लाली मूनिमानः कामीयः

५३

類

[illegible]

आशा नरकचि
1.550
ASHA ARCHIVES

लोकायाकर्तुर्जनायायमात्रः गन्धधारासासावानइदृशानमदयावः सा
मगात्रताम् लोकनगालकसाइन ॥ १८ ॥ कृष्यसनिनानिदाः श्रुः
कस्यकगात्रता। कः सोख्यंदविडानां इर्जनस्यकगाक्रमा ॥ ॥ व्यसः
नियाः यत्रपून्इठमइः रुफीमरुवयाः वरिखेमइः दविडयाः यत्रः
पून्सखमइः इर्जनयाकः क्रमाखमइसदा ॥ १९ ॥ गस्त्रस्यकगाः

क-प
२८

मन्त्राः इज्ज नस्य कृमा क्रमा वस्त्रा मुनीनां कृमा सहः सत्यं वकामिनि ॥ ॥
ख्याक मान्यमहः इज्ज नयाकः क्रमा खमहः वस्त्रा मिसायाकः मरुतामहः
कोमियाक सत्यमहः ॥ ६० ॥ इर्वल सवला वाजा वायानां वधिवं ववां व
लं मर्खसो मोनत्वं वीयाना मनं ववां ॥ ॥ इर्वल याववः वाजा वायकः
यावव वायः मर्खयाववः नानम आसं यान्यः खयावलः मसत्यहाय ॥ ६१

२८

दवगाः पृथिव्यभयथा मागाः मित्रं पृथिव्यभयथा मरुतः ॥ ॥ वाङ्मगसायमः
निधंः म्वायार्थ सायदवधंः सामसायः पृथिव्यः कायसायः मित्रं ॥ ६२
॥ गुर्वग्निद्विजानीनां वर्णनां वाङ्मगसायमः पृथिव्यकायुवः मुनीनां सर्वस्या
स्यागगायुवः ॥ ॥ वाङ्मगसायमः गुर्वग्निः वरुर्वर्णजातियाः गुर्ववाङ्मगः
मुनीयायुवः पृथिव्यः समसस्यायुवः मस्यागगतनडाअमं ॥ ६२ ॥ उरुमस्या

विचरिष्यः नीचापि गृहमागतः। पञ्चनीया उपाया गन्धः सर्वस्यागमायुत

॥ उरुमजागिरुत्रसां नीचजागिरुत्रसां श्रुतिः श्रुत्या गगनवचनासः ॥

जायाय जागन्धः श्वनधात्रसा समस्तः जागियायुत्रः श्रुत्या गगनडाडा मूधा ३०

॥ २० ॥ देवतापूषेय रुक्माः रुक्मादानन पञ्चयता गूड पञ्चापकावध

यस्य मतिवन्दना ॥ ॥ देवपञ्जायाय रुक्मिनः उर्गावनपञ्जायाय दा



ASHA ARCHIVES

5/18/84

1530